साप्ताहिक भविष्य

११ अक्तूबर से १७ अक्तूबर १९७६ तक

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : सप्ताह से अच्छा है परन्तु संघर्ष पहले इन दिनों काफी आयेंगे, कामधन्धा कमजोर फिर भी धन लाभ समय पर मिलता रहने से कामों में सफलता मिलती रहेगी, दौड़-धूप अधिक, शुभ कामों के प्रति लगन होगी।

वृष : कामधन्धों में सफलता मिलती रहेगी, लाभ बढ़ेगा, सप्ताह कुछ संघर्ष पूर्ण-सा महसूस होगा और व्यर्थ की परेशानियां पैदा होती रहेंगी, विशेष दौड़धूप से काम बनते रहेंगे, शत्रु पर विजय यात्रा सफल रहेगी।

मिथुन : यह सप्ताह आपके लिए लाभप्रद होने के साथ-साथ संघर्षपूर्ण भी रहेगा, कुछ अप्रिय घटनाएं जन्म लेंगी, फिर भी भाग्य का सहारा मिलेगा और हालात आपके नियंत्रण में ही रहेंगे।

कर्क : यह सप्ताह प्राय: पहले जैसा ही है, स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, अपरिचित से बचें—नहीं तो धोखा भी हो सकता है, सहयोगियों से मदद पायेंगे, साहस बना रहेगा, परिवार से सुख भी एवं चिन्ता भी।

सिंह : यह सप्ताह संघर्षपूर्ण-सा महसूस होगा, सोचे हुए कामों में कोई न कोई बाधा आ खड़ी होगी, कामधन्धों में भी परेशानी, फिर भी भाग्य साथ देता रहेगा, लाभ अच्छा व्यय अधिक, दौड़धूप अधिक रहेगी।

कन्या : कामधन्धों में धीरे-धीरे सुधार होने लगेगा और शुभ फलों में भी वृद्धि होती जाएगी, महत्व के कामों में सफलता, वातावरण सुधरेगा, रुके या बिगड़े काम बनते नज़र आयेंगे, बड़े लोगों का परामर्श रहेगा।

तुला : इन दिनों शुभ अशुभ मिश्रित फल प्राप्त होंगे, कभी मन इच्छित लाभ होगा। तो कभी किए कराए पर पानी फिर जाएगा, परिश्रम सफल, कामधन्धों से भी लाभ ठीक समय पर मिलता रहेगा।

वृश्चिक : आमदनी का उत्तम साधन होते हुए भी आपको लाभ आशा अनुसार से मिलेगा, व्यय यथार्थ होने पर भी अधिक होता महसूस होगा, मुकदमे आदि के कामों में विजय, यात्रा लाभप्रद।

धनु : रोजी-रोजगार में सुधार होने लगेगा और हालात भी पहले से काफी ठीक चल पड़ेंगे, मिले-जुले फल प्राप्त होते रहेंगे, अपनों से सहयोग एवं शुभ समाचार भी पाएगें, गुप्त शत्रु से बचें, घरेलू झंझट दूर होंगे।

मकर : इस सप्ताह व्यर्थ के कामों में समय अधिक खराब होगा या व्यय भी काफी होता रहेगा, अधिक दौड़धूप करने पर सफलता मिलती रहेगी, जल्दबाजी से काम न लें, सेहत नरम, राजकाज में सफलता।

कुम्भ : दिलचस्प होने के साथ-साथ यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी रहेगा, आमदनी अच्छी परन्तु व्यय की अधिकता से कुछ परेशानी, किसी नजदीकी का वाद-विवाद या कोई अप्रिय समाचार मिलेगा।

मीन : शुभ कार्यों से मन में प्रसन्नता, आर्थिक स्थिति भी संभलेगी, कुछ नई वस्तुओं की खरीद होगी, दौड़धूप अधिक, घरेलू चिन्ता अकारण हो, मित्र-मिलाप से प्रसन्नता, साहस शक्ति दृढ़ रहेगी।

आपके पत्र

दीवाना में फोटो प्रकाशित करने का धन्यवाद। अंक २८ अत्यन्त मनोरंजक था। मुझे आपसे एक शिकायत है कि मैंने काका जी, चाचा बातूनी को अनेक पत्र कूपन सहित भेजे हैं, दो मास हो गये, परन्तु कोई प्रकाशित न हुआ। क्या आप नए पाठकों से ऐसा व्यवहार करते हैं ?

सुरेन्द्र खुराना—पानीपत

दीवाना में मुंह देखा व्यवहार नहीं किया जाता, नम्बर आने पर तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर अवश्य दिया जायेगा। सं०

दीवाना का अंक २७ मिला। पढ़कर तबियत हरी हो गयी। टी० वी० पैरोडी 'इनसे मिलिये' बहुत पसन्द आई। सिलबिल पिलपिल ने तो हंसा-हंसा कर पेट दुखा दिया। जूडो-कँराटे कैसे सीखें लेखमाला बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्द्धक है। इस बार का तो सवाल यह है भी लाजवाब था। एक तरह से पूरा अंक संग्रहणीय था।

दीवाना में बस एक ही कमी है कृपया आप अनेक स्तम्भ जैसे काका के कारतूस, गरीबचन्द की डाक, आपस की बातें इत्यादि में कूपन न दिया करें। कूपन काटने पर एक तो दीवाना खराब हो जाती है, दूसरे कूपन के पीछे छपी कहानी या स्तम्भ कट जाते हैं। आशा है आप इस ओर ध्यान देंगे।

निशीष चन्द्र—रुड़की

आपकी सलाह पर विचार अवश्य किया जायेगा। सं०

मैंने आपका तेज साप्ताहिक दीवाना पढ़ा, पढ़कर दिल मचल उठा, मोटू पतलू, सिलबिल-दिलपिल बन्द करो बकवास बहुत ही पसन्द आये ?

नरेश कुमार रूपरेखा—रायपुर

हास्य-व्यंग से परिपूर्ण नये-नये फीचर और हास्य रचना लिए हुए 'दीवाना का अंक नं० २६ प्राप्त हुआ। इस अंक के सभी स्तम्भ पहले की तरह रुचिपूर्ण थे ! हाँ ! आजकल मोटू-पतलू के स्तम्भ रंगीन पर आधारित न होने के कारण कुछ कमी, अवश्य होती है।

उदयराम चमोली—देहरादून

मुझे यह देखकर घोर आश्चर्य होता है कि आप हास्य पत्रिका पर धारावाहिक कहानी क्यों प्रकाशित करते हैं, जबकि आपको दीवाना के हर पन्ने पर हास्य सामग्री देना विशेष अनिवार्य है जिससे पाठकों को भरपूर हास्य का आनन्द मिल सके। मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप इसके स्थान पर कोई नया स्तम्भ प्रकाशित करें। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है आप इस विषय पर अमल कर भविष्य में सुरुचिपूर्ण सामग्री प्रकाशित करेंगे।

और शेष स्तम्भ जैसे काका के कारतूस 'आपस की बातें', 'दीवाना पंचतंत्र', आपके पत्र, 'मोटू पतलू', आदि स्थायी रखें। ये स्तम्भ अपनी जगह पर बहुत सुन्दर हैं। ईश्वर करे यह हास्य पत्रिका विश्व में प्रचार हो व पत्रिका का स्तर गिरने न पाये। मेरी ओर से यही हार्दिक शुभ कामनाएं हैं।

सी आर गिरिराज—नेपाल

'दीवाना' का नया अंक २७ पढ़ा, मजा आ गया सम्पादक साहब। 'दीवाना' के साईज में आपने जो परिवर्तन किया वह वास्तव में काबिले तारीफ है। आप जो स्तम्भ 'साप्ताहिक भविष्य' छापते हैं ना, वह वास्तव में बिल्कुल सच होता है। मैंने हर बार सच पाया है। शर्माजी को बहुत-बहुत धन्यवाद। 'तर्क-कुतर्क' स्तम्भ में भेजने वालों का नाम क्यों नहीं प्रकाशित करते ?

योगेश कुमार अग्रवाल—नागालैंड

अब तो सबके नाम प्रकाशित किये जाते हैं। सं०

दीवाना का नया अंक २६ मिला, 'परोपकारी' तथा 'फिल्मों की अच्छी खबरें बुरी खबरें' अच्छी लगीं।

हमेशा की तरह 'मोटू पतलू' भी अपने नये रंगों में उभरते हुए दिखाई दिये, सब मिलाकर दीवाना अच्छा रहा।

ब्रजभूषण कपूर—बहादुरगढ़

मुख्य पृष्ठ पर

भीड़ में तो अक्सर ही
नहीं रहता है ध्यान
कौन सम्भाले पिल्ले को
और कौन उठाये सामान।
बहुत सोच विचार कर
बोला अक्ल का पहरेदार
चिल्ली उठाये पिल्ले को
और पिल्ला उठाये भार॥

अंक ३३, ११ अक्तूबर से १७ अक्तूबर १९७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०



आदि मानव
PLAZA
मैं तो इधर पलाजा डिस्को देखने आई थी। राम-राम बहन, जमाना कितनी तेजी से बदल रहा है। चारों तरफ नई-नई बातें हो रही हैं। पुरानी सभ्यता को लोग भूल रहे हैं। जंगल-जंगल, गुफाओं में होटल, रेस्टोरेंट और डिस्को खुल रहे हैं। सुना है कि डिस्को अजीब चीज है। वहां पेड़ के तने को खोखला कर उस पर किसी जानवर का चमड़ा कस कर बांध देते हैं और फिर उसे डंडे से पीटते हैं। उससे अजीब आवाज निकलती है।
और सब लोग उस आवाज के साथ नाचते उछलते हैं।
कृपया यहां घोड़ियां खड़ी न करें।
पहले कहां थीं यह चीजें? मैं कहती हूं मानव जाति का सर्वनाश होने वाला है। इन्सान तेजी से अपनी मौत को बुलावा दे रहा है। जब से यह आग नाम की मुई चीज का आविष्कार हुआ है लकड़ियां हर गुफा में जल रही हैं उससे जो धुआं निकलता है उससे हवा में इतना धुआं घुल जायेगा कि सारी मानव जाति खांसते-खांसते मर जायेगी।
सच कहती हो बहन तुम।
सबसे खराब चीज तो यह फैशन है फैशन!
फैशन का नाम न लो बहन! फैशन के चक्कर में लड़के-लड़कियां आज कल जोकर बन रहे हैं उन्हें देख सिर शर्म से झुक जाता है।
लड़कियां कैसे-कैसे फैशन कर रही हैं? मुझसे तो देखा ही नहीं जाता। शर्म हया का तो जैसे जनाजा ही निकल गया है। यह सब पश्चिम के जंगलों से आई हवा का ही परिणाम है। हे राम!
अब खुद ही देख लो नजारे! यह हाल है फैशन की मारी आज की लड़कियों का! सिर से लेकर पांव तक सारा जिस्म ढक रखा है जानवरों की खाल से बने लबादे से। आंखों पर भिंडी की पत्तियां लगा रखी हैं। सारे शरीर में सिर, नाक और मुंह ही दिखाई देता है। एक हमारा जमाना था जब हम तन पर बिना एक पत्ता तक ढके घूमा करती थीं। हम में अपने गुफा के खानदान की इज्जत की फिक्र होती थी पर इन्हें तो जैसे जमाने की कोई परवाह ही नहीं है।
फैशन सेंटर।
बा SSSSS


BE YOUNG! use
SIMCO
HAIR DYE
NATURAL BLACK
SIMCO
SIMCO
Permanent hair dye
A QUALITY PRODUCT FROM THE
MANUFACTURERS OF
SIMCO HAIR FIXER

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



शैलेश दरक, वर्धा (महाराष्ट्र)
प्र० : मैं आपको गिफ्ट देना चाहता हूं। किस पते पर भेजूँ काका जी ?
उ० : कर लेंगे स्वीकार हम, यदि कोई भी गिफ्ट,
फिर उससे भी चौगुनी, मांगोगे तुम लिफ्ट।

सुरेश खुराना 'पप्पी', जींद (हरियाणा)
प्र० : प्रेमी-प्रेमिका को घर से भागते समय क्या करना चाहिए ?
उ० : नोट और जेवर सभी, लेकर के उड़ जाउ,
फूंक-फांक सब माल को, घर वापस आ जाउ।

केवल प्रकाश 'दुआ', काशीपुर
प्र० : गरीबी से पीछा छुड़ाने के लिए क्या करना चाहिए ?
उ० : आर्ट तिकड़मी सीखकर, नेता बनो महान्,
बेशर्मी को ओढ़कर, निगल जाउ ईमान।

रत्नेश भारिया 'रत्न', जबलपुर
प्र० : बद मंदिर के द्वार पुजारी खोलता है, तो दिल के द्वार ?
उ० : सच्ची हो यदि प्रेमिका, खोले दिल का द्वार,
मुरझाई कलियां खिलें, आय बसंत-बहार।

नरेश कुमार कोहली, सिधौली (सीतापुर)
प्र० : मैं अपने दोस्त के बिना जिंदा नहीं रह सकता ! क्या करूँ ?
उ० : अलग-थलग क्यों भटकते, उठा रहे हो कष्ट,
चिपट-लिपटकर दोस्त से, हो जाओ एडजस्ट।

शंकरसिंह भारिया 'अकेला', जबलपुर
प्र० : गम दूर करने की दवा शराब है, क्या यह बात सच है ?
उ० : बेहोशी के दौर में, कुछ क्षण गम खो जाय,
उतर जाय जब नशा तब, गम दुगुना हो जाय।

मुहम्मद जफर अली, मुरादाबाद
प्र० : माँ के हाथ में अंडा, बाप के हाथ में डंडा, तो पत्नी के हाथ में ?
उ० : पत्नी आँख तरेरकर, जब बेलन दिखलाय,
अंडा-डंडा गिर पड़ें, घर ठंडा हो जाय।

योगेशकुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)
प्र० : छोरी गोरी अच्छी रहेगी या काली ?
उ० : गोरी काली कुछ सही, हो वह अपटूडेट,
सास-ससुर के सामने, पीती हो सिगरेट।

निसारुद्दीन, बुधवारा (भोपाल)
प्र० : जिंदगी का सबसे बड़ा सुख क्या है काका !
उ० : मृत्यु-समय जब निकट हो, निशदिन करो विचार,
प्रधान मंत्री-पद मिले, चाहे दिन दो-चार।

चन्द्रशेखर गोस्वामी, हरिद्वार
प्र० : झूठ के दर्शन कहाँ पर अधिक होते हैं ?
उ० : राजनीति के मंच पर, मिलें झूठ के ठूंठ,
या फिर इन्कम टैक्स में, देख लीजिए झूठ।

श्याम सुन्दर माहेश्वरी, फार्बिसगंज (बिहार)
प्र० : बेईमान को ईमान की कमाई से संतोष क्यों नहीं होता ?
उ० : गीता कहती, ज्ञानी को है मान और अपमान बराबर,
इसीलिए ईमानदार औ, झूठा-बेईमान बराबर।

अशोक जौहर 'नीलम', देहरादून
प्र० : मंत्रियों की भावना आजकल क्या है ?
उ० : जनहित जाए भाड़ में, स्वार्थ-भावना व्याप्त,
मान और अपमान तज, कुर्सी करिए प्राप्त।

श्यामसुन्दर जैन, सतना (म० प्र०)
प्र० : कहते हैं ईंट का जवाब पत्थर है, तो पत्थर का जवाब ?
उ० : सहन कर सकेगा उसे, है किसका बलबूत,
पत्थर का जो बाप है, उसको कहते जूत।

महेशकुमार खारीवाल, संगरिया
प्र० : काकाजी, गालियों का आविष्कार किसने किया ?
उ० : जले-भुने या तिरस्कृत, ईर्ष्यालु श्रीमान,
हाथ-पैर में दम नहीं, गाली बके जुबान।

उमेशकुमार अग्रवाल, ओटक पुरा (पंजाब)
प्र० : कलियुग के बाद कौन-सा युग आएगा ?
उ० : त्रेता में था राम-युग, द्वापर कृष्ण महान्,
कलि युग कुर्सी-युग हुआ, चौथा युग शमशान।

दिनेश अग्रवाल, पीलीभीत
प्र० : कुंवर सुखलाल के व्याख्यान सुनकर आप इतने प्रतिष्ठित हो गए, मुझे भी कुछ बताइए ?
उ० : आलस तज, कर्तव्य का पालन करो दिनेश,
चढ़ो प्रगति की सीढ़ियाँ, चमको देश-बिदेश।

कमलकुमार रस्तोगी, आगरा-३
प्र० : आपका पुत्र भी कुछ खोटे काम करने लगे तो ?
उ० : संजय और सुरेश, या देसाई के कांति,
इनका कीर्तन करेंगे, मिले हृदय को शांति।

दामोदर रामकिशन, बर्धा
प्र० : बीवी अच्छे नाक-नक्श वाली होनी चाहिए या गोरी ?
उ० : लैला काली थी, मगर मजनूं दिया न ध्यान,
नाक-नक्श को देखकर, जान करो कुर्बान।

अशोक छाबरिया, बुधवारा (भोपाल)
प्र० : आजकल उन्नति करने का साधन क्या है ?
उ० : लात मार सिद्धांत को, प्राप्त करो धन-मान,
दलबदलू बन जाइए, छोड़ धर्म-ईमान।

नारायण बाधवानी 'पप्पन', रायपुर
प्र० : प्यार है इससे, शादी करनी है उससे। यह समस्या हल कराएँ किससे ?
उ० : एक को पत्नी बना लो, दूसरी को प्रेमिका,
एक के सेवक बनो, दूजी बनाओ सेविका।

नंदकुमार वशिष्ठ, चक्रधरपुर
प्र० : मध्यावधि चुनावों का भविष्य क्या दिखाई दे रहा है काका ?
उ० : यदि चुनाव की चोट से, मरे नहीं ईमान,
इंदिरा जी की पार्टी, हो सबसे बलवान।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

3

लेखिका-संगीता

अविनाश बुरी तरह उछल पड़ा और एकाएक उसका दिल बहुत जोर से धड़का। दुलारी ने भी पलटकर देखा—मुन्नी दौड़ती हुई उधर आ रही थी। अविनाश चिल्लाया—'मुन्नी···मुन्नी···।'

फिर अविनाश गाड़ी में से छलांग लगाना ही चाहता था कि अचानक मुन्नी के पीछे से ठाकुर धर्मपाल सिंह की गरजती आवाज सुनाई दी—

'मुन्नी—कहां जा रही है ? लौटकर आ।'

इधर मुन्नी ठिठक कर रुक गई और उधर अबिनाश कूदते-कूदते रह गया। उसके अंतर की बेचैनी चेहरे से साफ झलक रही थी···आंखें फटी हुई थीं और उनमें आंसू तैर रहे थे···होंठ कांप रहे थे। उधर मुन्नी किसी पत्थर की सी मूर्ति बनी स्थिर रह गई, फिर अविनाश ने देखा, ठाकुर साहब ने मुन्नी की बांह पकड़ ली थी और उसे खींचते हुए घर की ओर ले जा रहे थे। मुन्नी पलट-पलट कर देखती जा रही थी और ज्यों-त्यों वह दूर होती जा रही थी अविनाश को ऐसे लगता था मानो कोई उसका दिल उसके सीने से खींचकर लिए जा रहा हो।

दुलारी ने ध्यानपूर्वक अविनाश का चेहरा देखा और खांसकर बोली—

'अरे पगले···क्यों झोंपड़ी में रहकर महलों के सपने देखता है।'

वह फिर खांसने लगी। मुन्नी बाग के पेड़ों की ओट में हो गई थी। एकाएक अविनाश का दिल व्याकुल हो उठा···उसने आस्तीन उठाकर मुन्नी की ओढ़नी की पट्टी बंधी हुई देखी और उसे चूमकर धीरे-धीरे सिसकियां भरने लगा। उसकी आंखों से टपटप आंसू बह रहे थे—दुलारी निरन्तर खांसे जा रही थी।

ठाकुर साहब मुन्नी का हाथ पकड़े हवेली में दाखिल हुए तो हुक्का पीते-पीते यशपाल हड़बड़ा कर खड़े हो गए। रामदेई ने जल्दी से पूछा—

'क्या हुआ नाथ ? यह मुन्नी को क्या हुआ ?'

'होता क्या ? पगड़ी उछालने गई थी अपने पिता की।'

'यह आप क्या कह रहे हैं नाथ ?'

'आज वह दुलारी नाम की भिखारिन गांव छोड़कर जा रही थी···आपकी सुपुत्री उस भिखारिन के बेटे निशु से मिलने जा रही थी।'

'नाथ यह आप कैसी बातें करते हैं··· अभी मुन्नी और निशु की उम्रें ही क्या हैं ? यह क्या जानें दुनिया की ऊंच-नीच को ? बचपन से साथ खेले-कूदे और पढ़े हैं, बचपन के साथियों के बिछुड़ने का दुःख किसको नहीं होता ?'

यशपाल ने हुक्का जमीन पर रखकर कहा—

'धर्मपाल, तुम सचमुच पागल हो गए हो···इतने-इतने बच्चों के बारे में ऐसी बातें करते हुए तुम्हें लज्जा आनी चाहिए।'

'भाई साहब, अब कुछ भी हो।' धर्मपाल ने गुस्से से कहा, 'मैं अधिक दिनों तक अब इसे न रखूंगा···बस इसी हफ्ते इसके फेरे कराए देता हूं।'

मुन्नी को पास-पड़ोस की औरतों ने दुल्हन बना दिया था···हाथों-पैरों में मेंहन्दी रचाई थी···लाल जोड़ा पहनाया था···बनाव सिंगार किया था और मुन्नी दुल्हन बनी बैठी थी—उसके चेहरे पर गहरी उदासी झलक रही थी— एक औरत ने पूछा—

'अरे मुन्नी···तू इतनी उदास क्यों है ?'

'काकी···' मुन्नी ने भारी आवाज में कहा, 'निशु जो शहर चला गया है।''

'शिश···।' काकी ने आंखें निकालकर होंठों पर उंगली रखकर कहा, 'खबरदार··· अब कभी ऐसी बात भी जबान पर मत लाना।'

क्यों ?' मुन्नी ने आश्चर्य से आंखें फाड़कर पूछा।

'अरे अब तेरी शादी दूसरे के साथ हो रही है···अगर अपने पति के सामने ऐसी बातें किसी और लड़के के लिए करेगी तो वह तुझ पर सन्देह करेगा।'

'किस बात का सन्देह करेगा काकी ?'

मुन्नी की आंखें आश्चर्य से और भी फैल गईं।

'ऐ···तू तो बिल्कुल बावली है।' काकी ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

'बावली नहीं···बच्ची तो है—वह क्या जाने दुनिया की ऊंच-नीच को ?' किसी और ने कहा।

'ऐ सिर झुकाकर बैठ।' एक औरत ने कहा, 'दुल्हनों को शर्माना चाहिए।'

मुन्नी ने सिर झुका लिया और थोड़ी ही देर बाद भिनभिनाई—

'काकी मेरी गर्दन दुःख गई।'

'अरे वाह—यह दुल्हन है या कुल उछाला।'

मुन्नी काकी की बातें सुने बगैर गर्दन सीधी करके उसे सहलाने लगी थी।

बाहर हवेली में शादी का सारा प्रबंध हो चुका था। लग्न-मण्डप बना हुआ था और पुरोहित बैठा श्लोक पढ़ रहा था। लड़का दुल्हा बना पटरे पर बैठा हुआ था—वह बार-बार अपने माथे से सेहरा हटाने लगता तो उसके पास बैठा एक बूढ़ा उसका हाथ झटक देता। ठाकुर धर्मपाल सिंह बड़े बेचैन दिखाई दे रहे थे। बाहर हल्की-हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। इतने में एक गांव वाला दौड़ता हुआ आया। और धर्मपाल ने जल्दी से उसके पास पहुंचकर पूछा—

'क्या हुआ हरिया ?'

'मालिक···पानी तो बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।'

'पुल अभी खतरनाक तो नहीं हुआ।'

'पुल पर पानी तो चलने लगा है लेकिन अभी खतरा नहीं।'

'उफ फो···धर्मपाल ने बेचैनी से कहा, 'यह मुहूर्त का समय ही नहीं हो रहा अभी।'

इतने में पंडित की आवाज आई—

'कन्या को बुलाओ···मुहूर्त का समय हो रहा है।'

ठाकुर धर्मपाल ने सन्तोष की सांस ली। थोड़ी देर बाद मुन्नी दुल्हन बनी दुल्हा के साथ पटरे पर बैठी थी···पंडित श्लोक पढ़ रहा था। मुन्नी ने कनखियों से अपने दूल्हा को देखा और उसका सेहरा उठाकर बोली—

'तुम भी गर्दन झुकाओ जी।'

अचानक काकी ने मुन्नी की पीठ पर धप मार कर गुर्रा के कहा—

'ओ मुन्नी की बच्ची, चुपचाप बैठ।'

मुन्नी मुंह बसूर कर पीठ सहलाती

शेष पृष्ठ ३४ पर

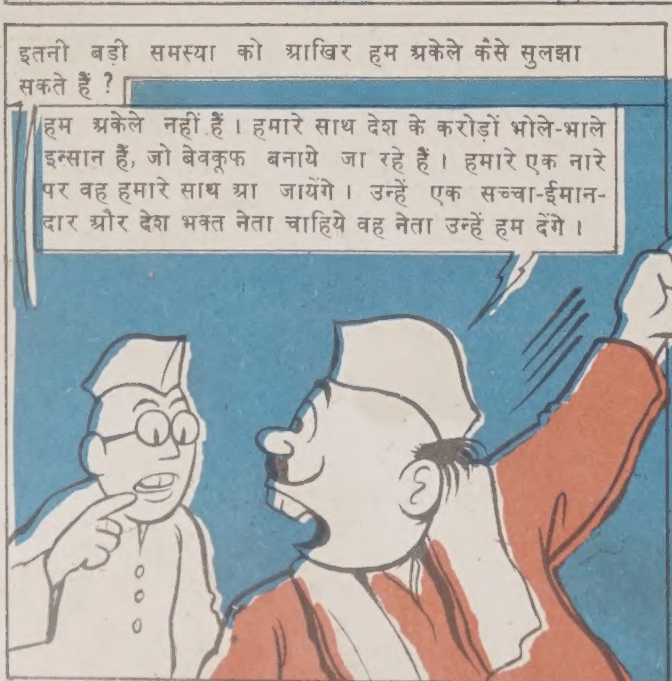
मोटू पतलू

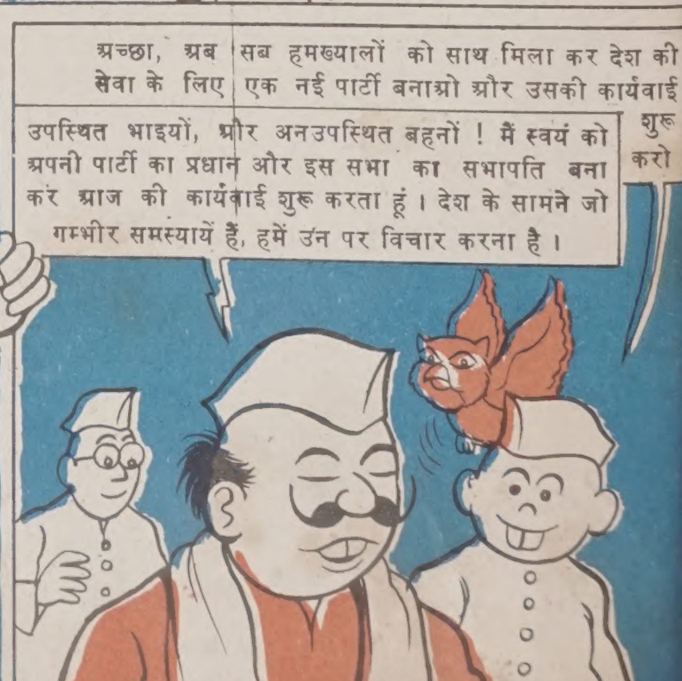
पिछले दिनों मोटू-पतलू और उनके साथियों को किसी दूसरे उपग्रह के प्राणी पकड़ कर ले गये थे। उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई थी और पृथ्वी पर वापस आकर उनके अन्तरिक्ष ने हिन्द महासागर में "सॉफ्ट लैन्डिंग" की थी। अन्तरिक्ष तो समुद्र में डूब गया था और वे लकड़ी की पेटियों पर बैठकर तैरते हुये पहुंचे थे। अब तक घसीटाराम पर से अंतरिक्ष के वैज्ञानिकों के प्रयोग का असर समाप्त हो चुका था और वह असली हालत में आ गया था।

इसके बाद उन्होंने वापस दिल्ली आकर देखा तो यहां का रंग ही बदला हुआ था। राष्ट्रपति ने दलबदलुओं से तंग आकर लोक सभा भंग कर दी थी और नये चुनाव की घोषणा कर दी थी। समाज का सारा ढांचा उथल-पुथल था और राजनीतिक गतिविधियां गिरगिट की तरह रंग बदल रही थी।

इस अवस्था में मोटू-पतलू ने सोचा कि देश की डूबती नैया को बचाना है तो उन्हें लोगों को सही रास्ता दिखाने के लिये राजनीति में भाग लेना होगा।



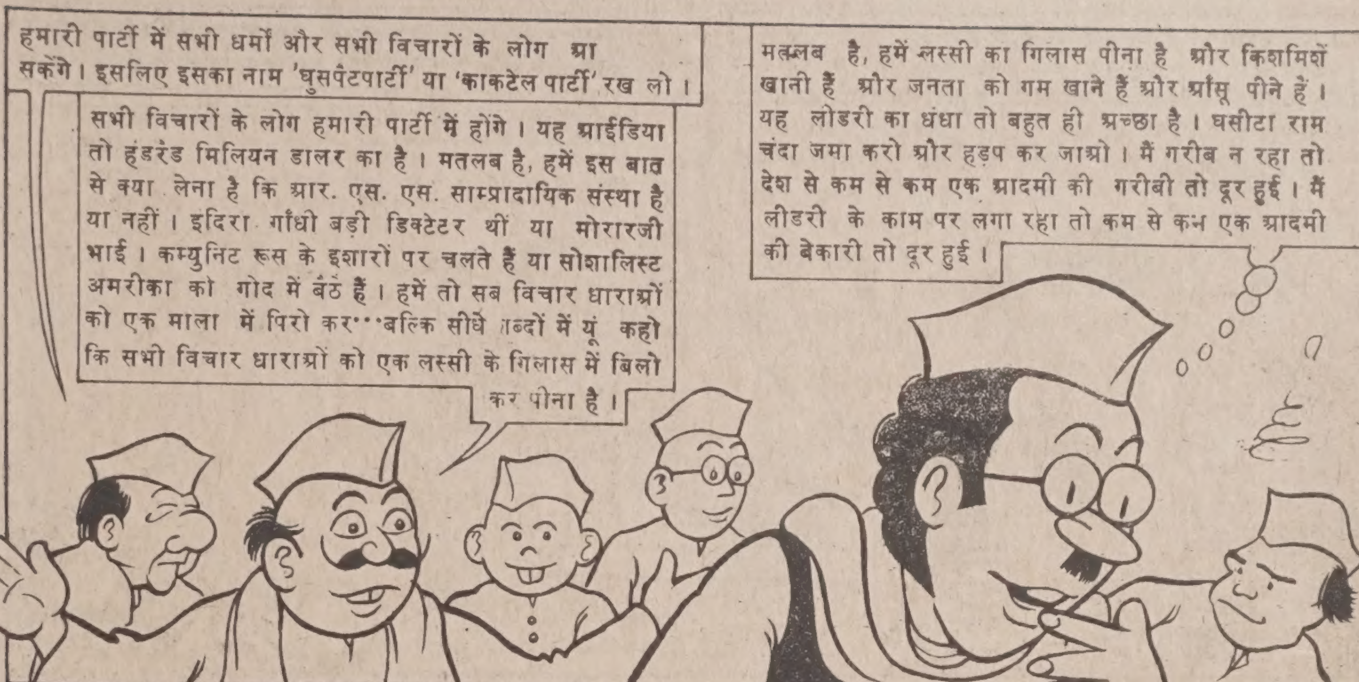




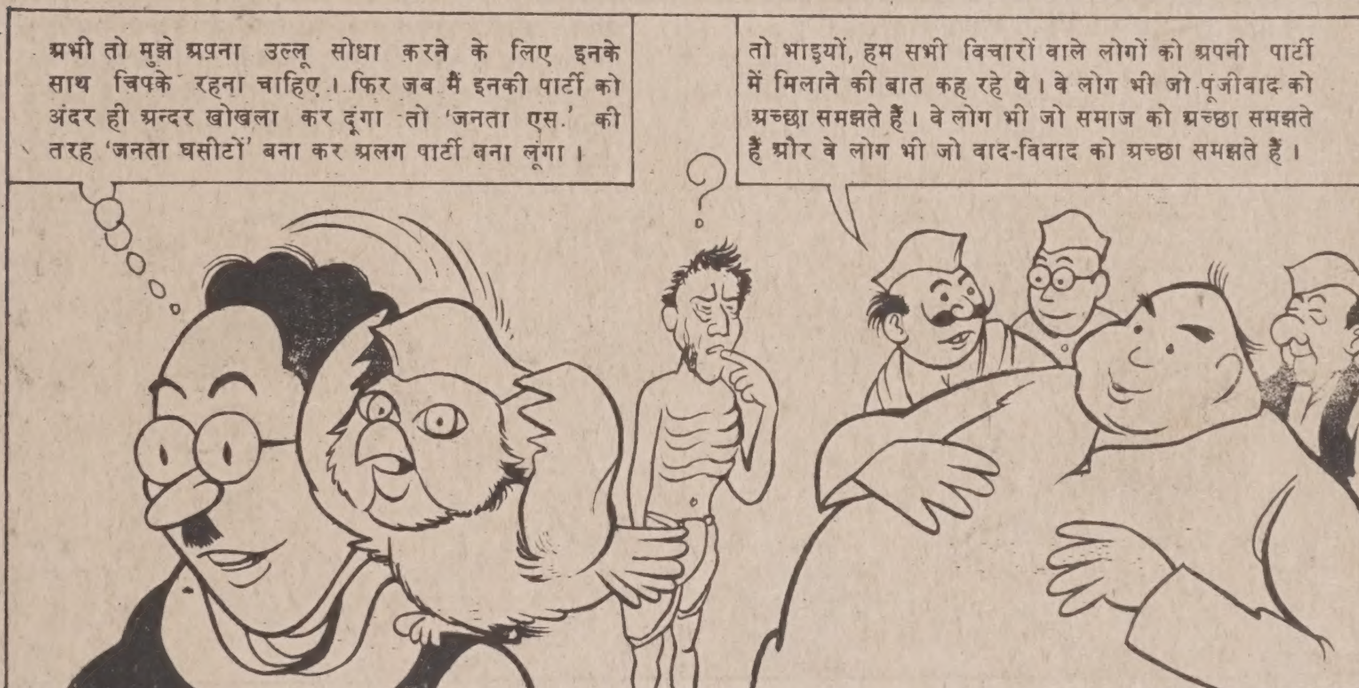


खुद ही अपने आपको प्रधान और सभापति बना लिया। इतनी बड़ी धान्धली तो आचार्य कृपलानी और जयप्रकाश नारायण ने भी नहीं की मोरार जी देसाई को प्रधान-मंत्री बनाकर।
मैंने जो किया है देश के लिए किया है।
यह टोपी सर पर आते ही सबको अपना हित देश का हित नजर आने लगता है।
हम यह धान्धली नहीं चलने देंगे।
हम तुम पर आयोग बिठायेंगे।
हम तुम्हें मारुति केस में फंसायेंगे।
हम तुम पर जीप स्कैंडल केस चलायेंगे।
हम तुम्हारे लड़के पर इन्कमटैक्स की चोरी का इल्जाम लगायेंगे।
शांत रहिये भाइयों, शांत रहिये! इसके कोई बेटा नहीं। यह मारुति कारखाने में चपरासी भी नहीं था और जीप क्या इसने कभी किसी तांगे वाले के पैसे भी नहीं मारे फिर तुम केस किस बात के लगाओगे?
छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करके हम अपना समय नष्ट कर रहे हैं।
पर जहां दो बर्तन हों वहां खड़कने की आवाज तो आती ही है।
जहां नेताओं की मीटिंग हो वहां सर तो फूटते ही हैं।
इसके लिए मैं सब उपस्थित भाईयों और अनउपस्थित बहनों से प्रार्थना करूंगा कि सरों का काम फूटना है, उन्हें फूटने दें। उनकी चिंता न करें और शान्ति बनाये रखें। आप लोगों की सुविधा के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि बरनॉल का मरहम और पट्टियां अपने झोले में लेकर चलें, दूसरी सुविधा के लिए हमने फ्री सर्विस का इन्तजाम कर लिया है। लावारिस मुर्दे उठाने वाली कमेटी की गाड़ी हमारी मीटिंगों के स्थान पर उपस्थित रहा करेगी।

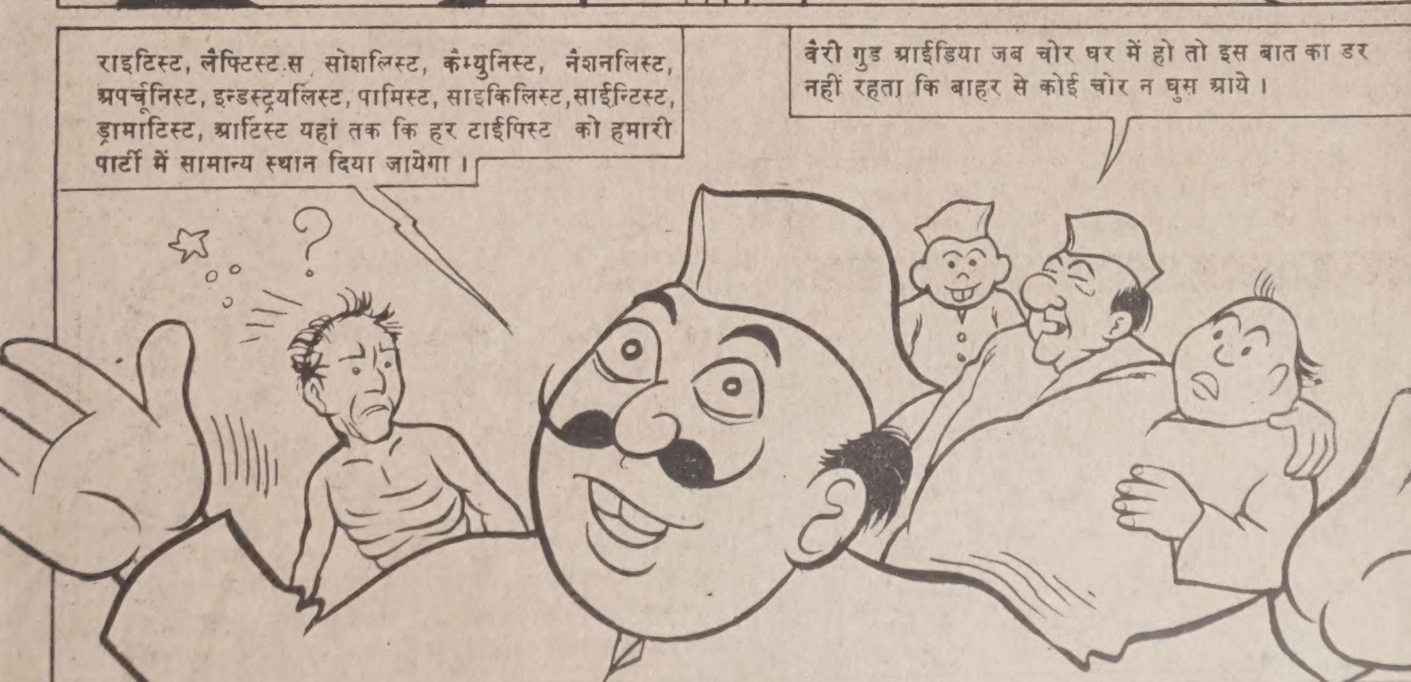

हां तो भाइयों ! मैं आज की मीटिंग में पहला प्रस्ताव यह पेश करता हूं, कि हमारी पार्टी का नाम क्या हो ?
यह प्रस्ताव नहीं है, यह तो सवाल है ।
सवाल ही सही । सवाल और प्रस्ताव में अन्तर क्या होता है ?
बहुत अन्तर होता है । सवाल में एक सुझाव भी नहीं होता और प्रस्ताव में एक निश्चित बात कही जाती है ।
मैं निश्चित बात ही कह रहा हूं कि हमारी पार्टी का नाम क्या हो ?
जहां "क्या" का शब्द प्रयोग किया जाए वह बात अनिश्चित होती है ।
इस बात पर निश्चय ही मैं तुम्हारा सर तोड़ दूंगा ।
मैं तुम्हारा चूं-चूं का मुरब्बा बना दूंगा ।
अरे क्या कर रहे हो भाई, शांत रहो, शांत रहो ।
अभी हमने "शान्ति-शान्ति" के शब्दों का प्रयोग किया । इससे यह सिद्ध होता है कि हम कितने शांति प्रिय हैं, शांति प्रिय होना हम भारतवासियों की घुट्टी में पड़ा है । यह हमारे देश की संस्कृति है, जिस पर हम हजारों साल से गर्व करते आये हैं ।
और जो कुछ अभी यहां हुआ और जो कुछ आप ने देखा उससे सिद्ध होता है, हमारी पार्टी के नेताओं में असली नेता वाले कितने गुण हैं । आज देश में कोई एसी बड़ी पार्टी नहीं जो आपसी प्रेम-प्यार बनाये रखने के लिए सभी प्रकार सर तोड़ कोशिश न कर रही हो । दरअसल जिस कोशिश में सर न टूटें उसे सरतोड़ कोशिश कहा ही नहीं जा सकता ।
हां तो भाइयों, हमारे सामने सबसे पहला सवाल है कि अपनी पार्टी का नाम क्या रखा जाये ।
पार्टी का नाम 'आया राम गया राम पार्टी' रख लो । यह हमारी डैमोक्रैसी की सही तस्वीर पेश करेगी ।
इससे तो अच्छा है पार्टी का नाम 'यम राज नारायण पार्टी' रख लो । राजनारायण के नाम से तो आया राम वाली विशेषता आ जायेगी और यमराज के नाम से पता लग जायेगा कि हमारी पार्टी लोगों को कहाँ ले जाना चाहती है ।



हमारी पार्टी में सभी धर्मों और सभी विचारों के लोग आ सकेंगे। इसलिए इसका नाम 'घुसपैटपार्टी' या 'काकटेल पार्टी' रख लो।
सभी विचारों के लोग हमारी पार्टी में होंगे। यह आईडिया तो हंडरेड मिलियन डालर का है। मतलब है, हमें इस बात से क्या लेना है कि आर. एस. एस. साम्प्रादायिक संस्था है या नहीं। इंदिरा गांधी बड़ी डिक्टेटर थीं या मोरारजी भाई। कम्युनिट रूस के इशारों पर चलते हैं या सोशालिस्ट अमरीका को गोद में बैठे हैं। हमें तो सब विचार धाराओं को एक माला में पिरो कर···बल्कि सीधे शब्दों में यूं कहो कि सभी विचार धाराओं को एक लस्सी के गिलास में बिलो कर पीना है।
मतलब है, हमें लस्सी का गिलास पीना है और किशमिशें खानी हैं और जनता को गम खाने हैं और आंसू पीने हैं। यह लीडरी का धंधा तो बहुत ही अच्छा है। घसीटा राम चंदा जमा करो और हड़प कर जाओ। मैं गरीब न रहा तो देश से कम से कम एक आदमी की गरीबी तो दूर हुई। मैं लीडरी के काम पर लगा रहा तो कम से कम एक आदमी की बेकारी तो दूर हुई।



अभी तो मुझे अपना उल्लू सीधा करने के लिए इनके साथ चिपके रहना चाहिए। फिर जब मैं इनकी पार्टी को अंदर ही अन्दर खोखला कर दूंगा तो 'जनता एस.' की तरह 'जनता घसीटों' बना कर अलग पार्टी बना लूंगा।
तो भाइयों, हम सभी विचारों वाले लोगों को अपनी पार्टी में मिलाने की बात कह रहे थे। वे लोग भी जो पूंजीवाद को अच्छा समझते हैं। वे लोग भी जो समाज को अच्छा समझते हैं और वे लोग भी जो वाद-विवाद को अच्छा समझते हैं।



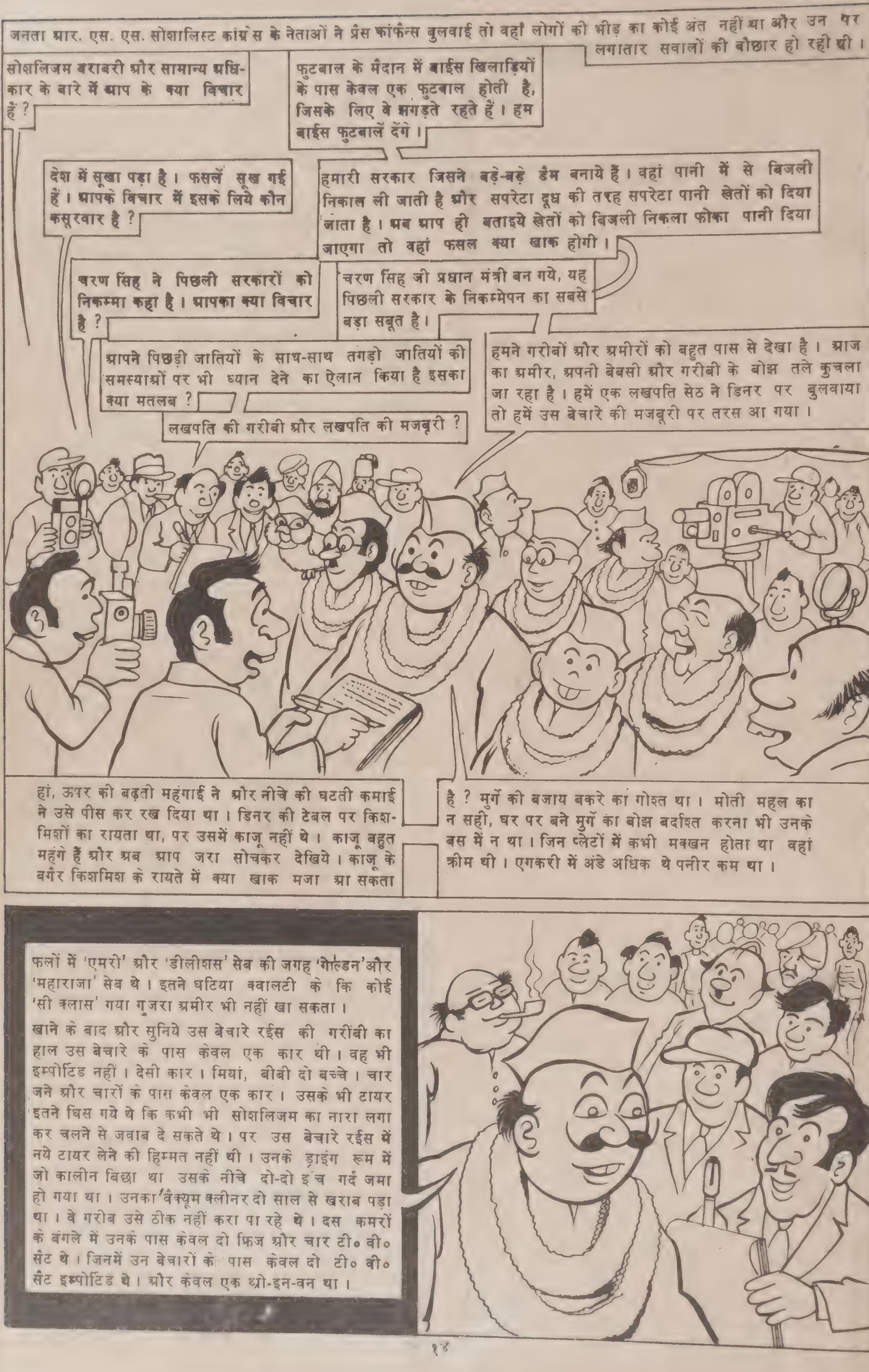
राइटिस्ट, लैफ्टिस्ट.स सोशलिस्ट, कैम्युनिस्ट, नेशनलिस्ट, अपर्चूनिस्ट, इन्डस्ट्रयलिस्ट, पामिस्ट, साइकिलिस्ट, साईन्टिस्ट, ड्रामाटिस्ट, आर्टिस्ट यहां तक कि हर टाईपिस्ट को हमारी पार्टी में सामान्य स्थान दिया जायेगा।
वैरी गुड आईडिया जब चोर घर में हो तो इस बात का डर नहीं रहता कि बाहर से कोई चोर न घुस आये।



इन बातों पर विचार करने के बाद और सभी विचार धाराओं को एक जगह मिलाकर तेल देखो और तेल की धार देखो' का नारा लगाने के लिए मैं यह प्रस्ताव रखता हूं, कि अपनी नयी पार्टी का नाम 'जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस' रखा जाये।
'जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस' वाह वाह, जवाब इस नाम का एक दो नहीं, इसमें तो गिरगिट के सारे रंग है। 'जनता - आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस' क्या कांटे का नाम है। जहां फंसेगा, कुछ फाड़ कर ही निकलेगा।
जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस जिन्दाबाद।
जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद।
इन्हें मेहनत करके पार्टी में जान डालने दो। फिर आर. एस. एस. का नाम लेकर इनकी खाट खड़ी कर दूंगा और उसकी जगह अपना खटोला बिछा दूंगा।
अगले रोज के समाचार पत्रों में जनता आर एस एस सोशलिस्ट कांग्रेस के गठन की जोर दार खबरें भरी हुई थीं।
देश को संकट से निकालने के लिये नई पार्टी।
मोटू-पतलू,
डाक्टर झटका ने देश की डूबती नैया को बचाने के लिये बापू की समाधि पर शपथ ली।
घसीटा राम भी अपने समर्थकों सहित जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस में शामिल.
चरण सिंह और राजनारायण के कैम्प में खलबली
चन्द्रशेखर की जनता पार्टी खतरे में
बाबू जगजीवनराम का तवा उल्टा
मोरार जी देसाई की लुटिया डूबी
असी कांग्रेस के कबूतर उड़ने लगे
मतदाता अब बेवकूफ बनने को तैयार नहीं !



मोटू-पतलू ने कांग्रेस (आई) के साथ कोई चुनाव समझौता न करने का एलान कर दिया।
हम गरीब लोग अपना बोझ खुद उठा लेंगे। आप अपने कंधों को कष्ट न दें। केवल पिछड़े वर्ग की बात करना तगड़े वर्ग के साथ अन्याय है। आज अमीर लोग अपनी गरीबी के बोझ तले दबे जा रहे हैं।
इन्दिराजी को फंसाने अधिनियम
हम सबको एक आंख से देखते हैं।
मतलब है इस पार्टी के नेता काने हैं।
जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस पार्टी बड़े तमतराक से सामने आई है। लगता है कमाल कर देगी।
बड़े जोरदार नारे लगाये हैं इस पार्टी के नेताओं ने। दूसरी सभी पार्टियों के कैम्पों में भगदड़ मची है। बे-पेंदे के लोटे लुढ़क रहे हैं। थाली के बेंगन थाली बदल रहे हैं।
आजकल के नेताओं का तो असूल ही एक है। जिधर हलवा बंटता देखो, अपना कटोरा लेकर वहीं पहुंच जाओ। यह खबर उड़ने की देर थी कि जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस पार्टी चुनाव के बाद सबसे बड़ी पार्टी बनकर सामने आयेगी। अब भला कोई दलबदलू क्यों टिकने लगा अपनी पार्टी में।
देखते ही देखते अब समाचार पत्र ऐसे समाचारों से भरे हुए थे।
आंध्र में सरकारी भवनों में संघ की शाखाओं पर पाबन्दी
चन्द्रशेखर को शेखी धरी की धरी रह गई
मोरारजी ने सियासत से संन्यास नहीं लिया तो जनता जबरदस्ती उन्हें लंगोटी पहना कर संन्यासी बनायेगी।
गांधी समाधि को धोने का कार्यक्रम रद्द
इन्हें अपने लिये चुल्लू भर पानी चाहिये!
टिकटों के नाम पर जूतियों में दाल बंटने लगी। बाबू जी चक्कर में
चाहे चुनाव हार जायें, पर हिम्मत नहीं हारेंगे। अटल बिहारी का अटल फैसला।
इंदिरा कांग्रेस में धमाका


जनता आर. एस. एस. सोशलिस्ट कांग्रेस के नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस बुलवाई तो वहां लोगों की भीड़ का कोई अंत नहीं था और उन पर लगातार सवालों की बौछार हो रही थी।
सोशलिजम बराबरी और सामान्य अधिकार के बारे में आप के क्या विचार हैं?
फुटबाल के मैदान में बाईस खिलाड़ियों के पास केवल एक फुटबाल होती है, जिसके लिए वे झगड़ते रहते हैं। हम बाईस फुटबालें देंगे।
देश में सूखा पड़ा है। फसलें सूख गई हैं। आपके विचार में इसके लिये कौन कसूरवार है?
हमारी सरकार जिसने बड़े-बड़े डैम बनाये हैं। वहां पानी में से बिजली निकाल ली जाती है और सपरेटा दूध की तरह सपरेटा पानी खेतों को दिया जाता है। अब आप ही बताइये खेतों को बिजली निकला फोका पानी दिया जाएगा तो वहां फसल क्या खाक होगी।
चरण सिंह ने पिछली सरकारों को निकम्मा कहा है। आपका क्या विचार है?
चरण सिंह जी प्रधान मंत्री बन गये, यह पिछली सरकार के निकम्मेपन का सबसे बड़ा सबूत है।
आपने पिछड़ी जातियों के साथ-साथ तगड़ी जातियों की समस्याओं पर भी ध्यान देने का ऐलान किया है इसका क्या मतलब?
हमने गरीबों और अमीरों को बहुत पास से देखा है। आज का अमीर, अपनी बेबसी और गरीबी के बोझ तले कुचला जा रहा है। हमें एक लखपति सेठ ने डिनर पर बुलवाया तो हमें उस बेचारे की मजबूरी पर तरस आ गया।
लखपति की गरीबी और लखपति की मजबूरी?
हां, ऊपर की बढ़ती महंगाई ने और नीचे की घटती कमाई ने उसे पीस कर रख दिया था। डिनर की टेबल पर किशमिशों का रायता था, पर उसमें काजू नहीं थे। काजू बहुत महंगे हैं और अब आप जरा सोचकर देखिये। काजू के बगैर किशमिश के रायते में क्या खाक मजा आ सकता है? मुर्गे की बजाय बकरे का गोश्त था। मोती महल का न सही, घर पर बने मुर्गे का बोझ बर्दाश्त करना भी उनके बस में न था। जिन प्लेटों में कभी मक्खन होता था वहां क्रीम थी। एगकरी में अंडे अधिक थे पनीर कम था।
फलों में 'एमरी' और 'डीलीशस' सेब की जगह 'गोल्डन' और 'महाराजा' सेब थे। इतने घटिया क्वालटी के कि कोई 'सी क्लास' गया गुजरा अमीर भी नहीं खा सकता।
खाने के बाद और सुनिये उस बेचारे रईस की गरीबी का हाल उस बेचारे के पास केवल एक कार थी। वह भी इम्पोर्टिड नहीं। देसी कार। मियां, बीबी दो बच्चे। चार जने और चारों के पास केवल एक कार। उसके भी टायर इतने घिस गये थे कि कभी भी सोशलिजम का नारा लगा कर चलने से जवाब दे सकते थे। पर उस बेचारे रईस में नये टायर लेने की हिम्मत नहीं थी। उनके ड्राइंग रूम में जो कालीन बिछा था उसके नीचे दो-दो इंच गर्द जमा हो गया था। उनका वैक्यूम क्लीनर दो साल से खराब पड़ा था। वे गरीब उसे ठीक नहीं करा पा रहे थे। दस कमरों के बंगले में उनके पास केवल दो फ्रिज और चार टी॰ वी॰ सैट थे। जिनमें उन बेचारों के पास केवल दो टी॰ वी॰ सैट इम्पोर्टिड थे। और केवल एक थ्री-इन-वन था।



इस फीचर के दिल बिठाने और रोंगटे खड़े करने वाले अगले हंगामे आगामी अंक में देखिये।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

राजा राम भेरूमल—परतवाड़ा : क्या मैं दिल्ली आकर आपसे मिल सकता हूं ?

उ० : अवश्य, पर इतना कष्ट करने की जरूरत क्या है। हम तो दीवाना के पृष्ठों में बन्द होकर खुद ही हर सप्ताह आपके पास पहुंच जाते हैं।

चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : क्या यह सच है कि आजकल आप मोरार जी टानिक का इस्तेमाल अधिक मात्रा में कर रहे हैं ?

उ० : जो टानिक मोरार जी को बहा कर ले गया, उससे हम दूर ही भले।

कृष्ण गोपाल—मुजफ्फरनगर : चाचा जी, किसी चीज से दिल उचाट हो जाये तो क्या करना चाहिये ?

उ० : दीवाना पढ़ना चाहिए, यह उचाट मन की उदासी चाट जाता है।

दिलीप कुमार पिपलानी—हापुड़ : चाचा जी, अगर मैं चाची को फिल्मी विलेन की तरह उठा कर ले जाऊं तो आप क्या करेंगे ?

उ० : आपकी जान को दुआयें देंगे और आपके उस पत्र का इन्तजार करेंगे, जिसमें आप हमें लिखेंगे, 'चाचा जी, यदि मैं चाची को लौटा दूं तो आप मुझे क्या देंगे ?' और इस पत्र के उत्तर में हम लिखेंगे, "भतीजे जी, यदि आप चाची को सदा के लिये अपने पास रख लें, तो आप हमसे क्या लेंगे ?"

बलवन्त सिंह, पिथौड़ागढ़ : चाचा जी, राजनारायण जी क्या वास्तव में कोई जादूगर हैं ?

उ० : बहुत बड़े जादूगर हैं, गोगियापाशा तो बड़े से हैट में से खरगोश निकलता था, राजनारायण पाशा छोटे से टोकरे में से गधा निकाल सकता है।

भूषण तनेजा-इन्दौर : क्या मोटू की पत्नी भी इसी प्रकार मोटी है ?

उ० : मोटू अभी किसी का पति नहीं बना है, वह चाहते हैं कि पति बनने का चान्स मिले, तो वह राष्ट्रपति बने, सेनापति बने, और कुछ भी न बन पाये तो कम से कम लखपति ही बन जाये।

दिनेश वर्मा-नारनौल : चाचा जी, यह बताने की कृपा करें कि आपके कुल कितने बच्चे हैं ?

उ० : हमारे भतीजे ही हमारे बच्चे हैं, और जैसे हमारे देश के सत्तर बड़े घरानों की दौलत का कोई हिसाब नहीं, जितनी देर इसका हिसाब लगाने में लगती है, उतनी देर में दौलत बढ़कर कहीं से कहीं पहुँच जाती है, इसी तरह जब हम अपने भतीजों का हिसाब लगाने लगते हैं, तो वे बढ़कर कहीं से कहीं पहुँच जाते हैं, आज से पंद्रह साल पहले भतीजों की संख्या पांच लाख थी, फिर भतीजे जवान हुये और उनके बच्चे पैदा होने लगे, इन्दिरा सरकार ने "दो या तीन" का नारा जितनी जोर से लगाया, भतीजों ने उतनी ही ज़ोर से "आठ या दस" का असूल अपनाया। अब अगर मोरार जी सरकार परिवार नियोजन का एक छोटा सा नारा ही लगा देती, तो हमारे बच्चों की संख्या इतनी होती कि लोगों के लिये घरों में तो क्या पेड़ों पर रहने की जगह भी न मिलती।



मुकेश भटनागर—किला चित्तौड़गढ़ : चाचा जी, मैं एक मनोरंजक फिल्म बनाने जा रहा हूं, आप उसमें कौन-सा रोल करना पसन्द करेंगे ?

उ० : मीना कुमारी या मधुबाला का। क्यों फिल्मों में तो लोग वही बनते हैं न जो कुछ वे वास्तव में नहीं होते।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा : चाचा जी, मैंने कल आपको सपने में रोते हुए देखा था, क्या आप रोते भी हैं ?

उ० : हसने हंसाने की बात कीजिये। रोने तो हम अपने दुश्मनों को भी नहीं देते।

अशोक जौहर "गगन"—देहरादून : डीयर अंकल, क्या कारण है कि आप इस उम्र में भी हसीन लगते हैं ?

उ० : कारण यही है कि आप अभी उस उम्र को नहीं पहुंचे हैं कि दिखाई देना बन्द हो जाये।

तरसेम राही, "टिंकू"—मोगा : आजकल लड़कियां लड़कों की नकल क्यों करने लगी हैं ?

उ० : पता नहीं, जब हम स्कूल में पढ़ते थे तो इम्तहान के कमरे में किसी की भी नकल नहीं करते थे।

सुरेश आहूजा—आगरा : चाचा जी, सच्चे बोलने वाले आदमी की पहचान बताइये।

उ० : वह गूंगा होगा।

ओमप्रकाश मालचन्द का—लोसल, राजस्थान : दो मनुष्यों के बीच सबसे नजदीकी रिश्ता कौन सा हो सकता है ?

उ० : दीवानगी का।

मोतीराम, टहलवाणी—परतवाड़ा : आखिर मनुष्य दौलत के पीछे कब तक भागता रहेगा ?

उ० : जब तक मनुष्य बना रहेगा। किसी घोड़े के सामने नोटों की गड्डियां रख दीजिये, क्या वह उनकी ओर भागेगा ?

रवि भाटिया—शंकर रोड, मार्किट : चाचा जी, मोटी अक्ल वालों की क्या पहचान होती है ?

उ० : आपको देखा नहीं, केवल आपका पत्र पढ़ा, आप सामने होते तो हम आपके प्रश्न का कुछ उत्तर देते।

बलजीतसिंह राणा, 'चिड़िया'—हरियाणा : आप केवल "आपस की बातें" ही करते हैं, या पेट भरने के लिए कोई और काम भी करते हैं ?

उ० : जी हां, वह काम यह है, कि पेट भरने के लिए खाना खाते हैं।

भीम सिंह—अलवर : क्या कारण है कि मनुष्य सच्चे दिल से भी जो चाहता है, वह पूरा नहीं हो पाता ?

उ० : इसके कई कारण हैं, जैसे एक लड़की ने अपनी एक अधेड़ उम्र सहेली से पूछा, "बहन, क्या कारण है कि तुमने अब तक विवाह नहीं किया ?" सहेली ने उत्तर दिया, "क्या बताऊं जो मुझसे विवाह करना चाहता है उसके पास पैसा नहीं होता और जिसके पास पैसा होता है, वह मुझसे विवाह करना नहीं चाहता।"

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा : बातूनी अंकल, सुना है आंटी बहुत मोटी है, आपके हाथ क्या आया ? यदि वह परी होती तो क्या होता ?

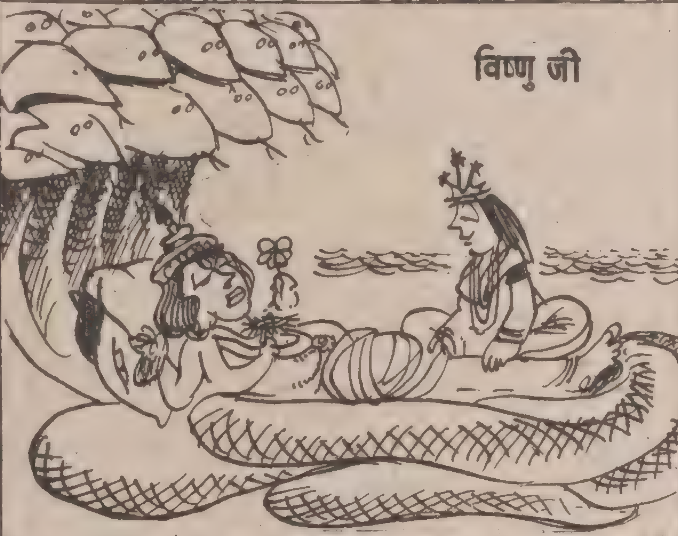
उ० : वह उड़ जाती और हमारे हाथ फिर भी कुछ नहीं आता।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

देवी देवता मॉड फैशन में

हमारे देवी-देवताओं का जो स्वरूप है वह हजारों वर्ष पूर्व का है। आज का उनका हाल कोई नहीं जानता। हो सकता है वह बदलते जमाने के साथ बदल रहे हों। किसे पता है? अगर वे प्रगतिशील हैं तो आज पर्दे के पीछे कुछ ऐसा हो रहा होगा ...।

विष्णु जी



मैं फिर कहती हूं कि डनलोपिलो का गद्दा लें तो ठीक रहेगा।

श्रीकृष्ण जी

सुदामा, बंसरी तुम ले लो! मैं अब इलेक्ट्रिक, गिटार बजाना सीख रहा हूं।



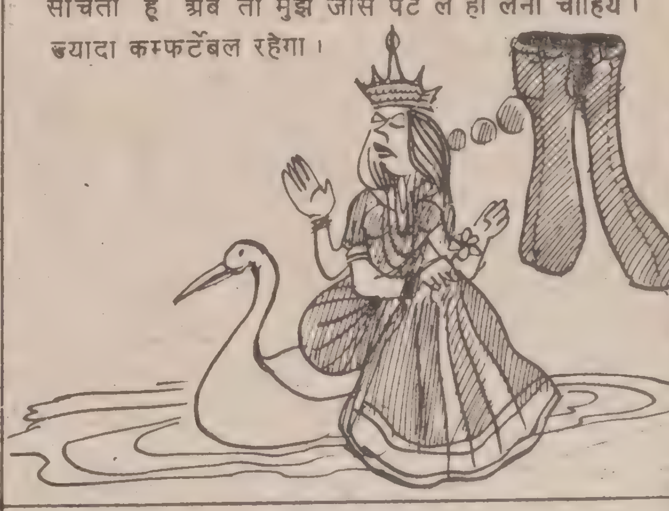
हनुमान जी

भक्ति के प्रसाद के लड्डू खाते-खाते मुंह का स्वाद ही बिगड़ गया है। तुम जरा दो प्लेट भेल पूरी तो ले आओ।



सरस्वती जी

सोचती हूं अब तो मुझे जींस पेंट ले ही लेनी चाहिये। ज्यादा कम्फर्टेबल रहेगा।



गणेश जी

गणेश जी को अब मेरी जरूरत नहीं रही। उन्होंने वैस्पा स्कूटर खरीद लिया है।



शिवजी

भंग से अब मैं बोर हो गया हूं। तुम कहीं से मैन्ड्रेक्स की गोलियां तो मंगवा लो।



आधुनिक योगासन ②

काका हाथरसी

काका हाथरसी लिखित अप्रकाशित पुस्तक 'भोगा एण्ड योगा' का एक अंक

४. हड़तालासन

विधि—

सीधे खड़े हो जाइए और हाथों को कूल्हों से सटाकर रखिए। बाईं हथेली खोल कर बांई जंघा से सटाकर रखिए एवं दाहिने हाथ की मुट्ठी को कसकर बंद कीजिए। आसन के समय एक बार मन ही मन 'इनक़लाब जिंदाबाद' कहिए, पुनः नारा



दोहराते समय "इन्कलाब" कहकर हाथ को मोड़कर, मुट्ठी का कंधे तक ले आइए और इस स्थिति को कायम रखते हुए 'जिंदा' कहिए और 'बाद' में के 'बा' से मुट्ठी को झटका देकर हवा में तिरछा करके ऊपर की ओर झटके से फेंकिए। यह झटका 'बाद' के 'द' पर समाप्त होना चाहिए। फिर दाहिने हाथ को पूर्वावस्था में लाकर यह क्रिया पुनः कीजिए। अभ्यास के लिए अन्य नारों को भी अपनाया जा सकता है। जैसे—

१. वेतन बढ़ाओ, मंहगाई हटाओ,
काम के घंटे आधे कराओ।

२. आधी छुट्टी, आधा काम। फिर भी
पाएं पूरे दाम॥

३. चले हमारी डेमोक्रेसी
उत्पादन की ऐसी-तैसी

४. इम्तहान में नकल करेंगे
इत्यादि-इत्यादि।

लाभ

सफल हुई इस काल में, शत-प्रतिशत हड़ताल,
दृढ़ कठोर सरकार भी, झुक जाती तत्काल।
झुक जाती तत्काल, मिलेगी तनखा ड्योढ़ी,
खुश-खुर्रम है पुलिस, हो गए गाल कचोड़ी।
ऐप्लीकेशन व्यर्थ, भाड़-चूल्हे में झोंको,
जेल भरो, हड़ताल करो, माइक पर भौंको।
कहे काका, लोहा ले सकते हो शासन से,
दूर गरीबी हो जाएगी, इस आसन से।

५. मुक्कासन

विधि —

सीधे तनकर खड़े हो जाइए। मुंह को दीवार की ओर रखिए। आंखों को अधिकतम फाड़िए और दांतों को भींचते हुए, नासिका से क्रोधित सर्प जैसी फुफकार छोड़िए। धीरे-धीरे फुफकार की गति बढ़ाइए और जब गति तीव्रतर हो जाए तो सीधे हाथ की मुट्ठी को कसकर बांधिए और अपने प्रतिपक्षी को कल्पना करके दस बार धुआंधार प्रहार कीजिए। इसी तरह बांए हाथ से उपरोक्त क्रिया को दोहराइए। आसन करते समय मन ही मन मोहम्मद अली (कैशियस क्ले) का नाम जपने से जल्दी सिद्धि प्राप्त होगी।



लाभ

कोई यात्री रेल में, झपटे आपकी सीट,
बिस्तर अपना डालकर, लेट जाय वह ढीठ।
लेट जाय वह ढीठ, व्यर्थ मुंहजोरी छाड़ो,
मारो मुक्का तान, दांत बत्तीसों तोड़ो।
मिले जेबकट, चोर उचक्का, फक्कड़ फुक्का,
ऐसे संकट समय काम आता है "मुक्का"।
कहं काका, जब संसद में लड़ते नेताजी,
मुक्कासन में दक्ष, मार ले जाएं बाजी।

६. भौंकासन

विधि —

सीधे खड़े होकर कमर को थोड़ा सा झुकाइए, किन्तु सिर नहीं झुकना चाहिए। दोनों हाथों को अपने दोनों नितम्बों पर रखकर, मुख से "भौं-भौं" की ध्वनि का उच्चारण कीजिए। हर बार "भौं-भौं" करने पर पेट की वायु क्रमशः बाहर-भीतर होती रहेगी। "भौं-भौं" करते समय आंखों को खोलने और बंद करने, भौंहों को ऊपर-नीचे चलाने के साथ-साथ गर्दन को झटके देना भी आवश्यक है।



लाभ

भौंकासन के लाभपर, सब साधक दें ध्यान,
वक्ता का मुख-स्वर खुले, श्रोताओं के कान।
श्रोताओं के कान, आर्ट जब आप दिखाएं,
बड़े-बड़े भौंकू नेता, पीछे रह जाएं।
हो चुनाव, तब गली मोहल्लों में चिल्लाओ,
"फुल पावर से भौंक, विजयश्री गले लगाओ।
कहें काका, भौंकासन आसन के बलबुत्ते,
भौंक कम्पटीशन में, तुमसे हारें कुत्ते।

शेष आगामी अंक में

कालेज गर्ल

—प्रमोद कुमार 'मनसुखा'

नूरी, जूली से ज्यादा
मुझे— 'कॉलेज गर्ल'
पसन्द आई है,
पत्नी बोली—मुझे
छोड़कर ये
"कॉलेज गर्ल"
फँसाई है।

हेलमेट

अनिल 'धमाका', नगीनवी

मेरी हेलमेट,
हमेशा एक पंथ दो काज
करती आई है,
क्योंकि कई बार मेरी पत्नी ने
इससे 'शू-स्टोर' पर
अपने सेण्डिल की
मजबूती आजमायी है,

फैण्टम — जंगल शहर



तुम···!
घूंसा
!
पार्क की एक सुनसान जगह !
!
नहीं !
फंण्टम में बिजली से भी ज्यादा फुर्ती है जंगल की पुरानी कहावत है ।
रात के समय पार्क में लुटेरों के विरुद्ध फैण्टम !
!
कोई इन्सान इस तरह का निशाना नहीं लगा सकता!
आह···
घूंसा!!!
डरो मत मैडम ! आज के लिये इनका खेल खत्म।
मगर तुम ? !
!
मैं तुम्हारी सहायता के लिए आया था, दुख देने नहीं।
तुम्हें गोली लगी थी, मुझे अपनी बाजू दिखाओ।
किस्मत अच्छी है···सिर्फ हल्की सी खरोंच आई है फिर भी डाक्टर को दिखा लेना।
तुम···तुम कौन हो ?
अरे···तुम क्या ढूंढ़ रहे हो ?
?
ऐसे लोगों द्वारा पुलिस का एक बैज चुराया गया था।
इनके पास भी नहीं है जब तक मिल नहीं जाता तब तक ढूंढ़ता रहूंगा।
हम तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करें ! हम तुम्हारा नाम तक नहीं जानते।
मैं भी तुम लोगों का नाम नहीं जानता।


ये इनके जबड़ों पर निशान कैसा ? बदमाशों के गिरोह का लगता है ?
तुम तो यही सोचोगे ।
अब हम क्या करें ?
पुलिस को बुलाओ और इनके बारे में निश्चिन्त रहिये ।
कुछ देर के लिये इनका हिलना-जुलना बन्द समझो"
अरे···हम तुम्हारे बारे में कैसे बतायेंगे कि एक नकाब पोश आदमी···?
तुम्हें यह बताने की जरूरत नहीं है ।
क्योंकि मैं यहां नहीं हूंगा ।
जब पुलिस यहां आयेगी तो हम उनको कैसे बतायें ?
उनको बोलना इस काम में हमारी किसी अजनबी ने मदद की थी, पार्क में···
मदद ? मगर यह सब तो तुमने स्वयं किया है ।
रोनी, शुक्र है भगवान का कि तुम ठीक हो ।
तुम भी प्रिये ! अगर यह न आता तो हम लोगों का बचना मुश्किल था···।
तुम्हारा शुक्रिया··· ओह···चला गया ?
अरे कहां गया ?
क्रमशः

क्यों और कैसे

प्र० : ऐन्टीबाइयोटिक शरीर पर क्या प्रभाव डालती है। इनके किस प्रभाव से रोग ठीक हो जाता है ?

उ० : ऐन्टी-बाइयोटिक रसायन है, जब ये रसायन शरीर में प्रवेश करते हैं, कई प्रकार के जिरासिमों को या तो मार देते हैं या बढ़ने से रोकते हैं। और ये हमारे शरीर के रोग से लड़ने में सहायता करते हैं।

ऐन्टी-बायोटिक नाम इन दवाओं को सबसे पहले १९४२ में दिया गया था। ये शब्द दी ग्रीक 'जीवन के विरुद्ध' अर्थ वाले शब्दों से लिया गया है। ऐन्टी-बायोटिक जिरासिमों के जीवन के विरुद्ध कार्य करते हैं।

बहुत सी ऐन्टी-बायोटिक जीवाणुओं से बनाई जाती हैं। जीवाणु सूक्ष्म जीव होते हैं। उदाहरण के लिए बैक्टीरिया तथा मोल्ड जीवाणु होते हैं। ऐन्टी-बायोटिक बनाने के लिए वो जीवाणु छोटे हो जाते हैं। जिनमें रोग के जीवाणुओं से लड़ने के लिए रसायनों को उत्पन्न करने की क्षमता होती है, दूसरे शब्दों में मनुष्य प्रकृति में जीवाणुओं के जीवन के युद्ध का लाभ उठाता है। जीवित रहने के लिए जीवाणु निरन्तर लड़ते रहते हैं, जीवन की लड़ाई के दौरान ये अपने शरीर से मिलेजुले रसायन उत्पन्न करते हैं। इन रसायनों पर परीक्षण करके वैज्ञानिकों ने कई रोगोंके जिरासिम मारने वाले रसायनों का पता लगा लिया है। यदि ये रसायन प्रयोगशालाओं में बड़े पैमाने पर बनाये जा सकते हैं, तो इन्हें ऐन्टी-बायोटिक बनाने के काम में लाया जा सकता है।

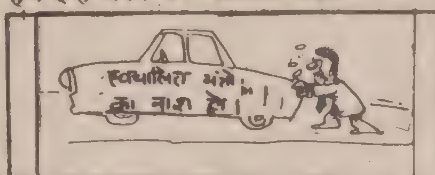
ऐन्टी-बायोटिक कैसे रोग को नष्ट करती है, ये शरीर में रोग ग्रस्त स्थान पर कैसे पहुंचती है ? आश्चर्य की बात ये है। आज भी विज्ञान इसका उत्तर नहीं जानता। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि ये जिरासियों की आक्सीजन रोक देती है जिससे वे स्वयं आक्सीजन के अभाव में बढ़ने बन्द हो जाते हैं। दूसरे मत के अनुसार ऐन्टीबायोटिक जिरासिमोंको रोगी के शरीर से भोजन नहीं लेने देती और जिरासिम भूखे मर जाते हैं। इससे भी अलग मत के अनुसार जिरासिम ऐन्टीबायोटिक को भोजन समझ कर खा लेते हैं और इसके जहर से मर जाते हैं। वस्तुतः ऐन्टी-बायोटिक कई प्रकार कार्य करती है, ये भिन्न प्रकार के जिरासिमों पर भिन्न प्रभाव डालती है। एक प्रकार के जिरासिमों को ये मार देती है तो दूसरों को कमजोर बनाकर शरीर के प्राकृतिक रक्षा करने वाली द्वारा इन्हें समाप्त करवाती है।

प्र० : ऊंट के अतिरिक्त संसार में कौन से ऐसे पशु हैं जो रेगिस्तान में पानी के बिना जीवित रह सकते हैं ?

महावीर जैन—हस्तिनापुर

उ० : लगभग सभी पशुओं को पानी की आवश्यकता होती है। परन्तु बहुत से पशु वास्तव में पानी कभी नहीं पीते अपितु अपने भोजन से ही आवश्यक नमी प्राप्त कर लेते हैं। कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार जिराफ, ऊंट से अधिक देर तक पानी के बिना जीवित रह सकता है। ऊंट पानी के बिना सात दिन से अधिक जीवित नहीं रहपाता, जैसा कि समझा जाता है ये अपने पेट में पानी एकत्रित करके नहीं रखते।

गैवरील एशिया तथा अफ्रीका में पाये जाने वाले छोटे-छोटे रेगिस्तान के जानवर हैं। ये सूखी तथा गर्म जलवायु में पाये जाते हैं। इन्हें अपने को जीवित रखने के लिये



बहुत संघर्ष करना पड़ता है। ये सूखे बीजों तथा जड़ों को खाते हैं फिर भी उनमें से ही जो थोड़ी बहुत नमी होती है सोख लेते हैं तथा इन्हें पानी पीने की आवश्यकता लगभग कभी नहीं पड़ती। गैरील पालने पर बहुत शीघ्र बढ़ते हैं और इसी कारण इन्हें काफी पाला जाता है। जरबोआस नामक जानवर भी इन्हीं प्रदेशों में पाये जाते हैं। ये नमी अपने भोजन से ही प्राप्त कर लेते हैं, ये दिन का गर्मी का अधिकतर समय धरती के भीतर के अपने बिलों में व्यतीत करते हैं, गर्मी से बचने के लिये दिन में ये बिलों के द्वार को बन्द कर लेते हैं।

प्र० : तिपतिया को शुभ तथा मंगलकारी क्यों मानते हैं ? संतोष कुमार, गोरेगांव।

उ० : अमंगल करने वाले बुरे प्रभाव से बचने तथा भाग्य को संवारने के प्रयास के कारण मनुष्य द्वारा संसार में असंख्य अन्ध-विश्वासों का आरम्भ हो चुका है। सरसरी तौर पर इन अन्धविश्वासों को दो भागों में बांटा जा सकता है शुभ तथा मंगलकारी तथा अशुभ और अमंगल करने वाले।

तिपतिया को शुभ तथा मंगलकारी तथा संसार में खुशी बढ़ाकर भाग्य बढ़ाने वाला समझा जाता है। तिपतिया को मंगल-मय समझने का विश्वास इतना पुराना है कि कोई नहीं बता सकता कि ये कब और कहां आरम्भ हुआ। अपितु, इसके साथ एक कथा जुड़ी हुई है कि जब ईव को जन्नत से निकाला गया तो वह वहां से अपने साथ एक तिपतिया ले गई थी तथा जन्नत से आई हुई इस हरियाली को भाग्य का चिन्ह माना जाने लगा। इसीलिये किसी के बाग में उगने पर भी इसे शुभ तथा जन्नत से ही सम्बन्धित माना जाता है।

इसी प्रकार घोड़े की नाल को भी शुभ तथा मंगलकारी माना जाता है तथा ये कहना कि ऐसा क्यों समझा जाता है कठिन है। अपितु हर देश में नाल को शुभ समझने के कारण से एक भिन्न कथा जुड़ी हुई है। आइरिश लोगों के अनुसार जिस तबेले में ईसा मसीह का जन्म हुआ था वहां घोड़ा था और इसी कारण घोड़े की नाल में जादुई प्रभाव होता है। रूस के लोग लोहार को जादूगर समझते थे तथा ये समझते थे कि घोड़े की नाल को वो जादू करने में प्रयोग में लाता है। प्राचीन रोम के लोगों का विश्वास था कि सड़क पर पड़ी घोड़े की नाल मिलने से रोगों से रक्षा होती है। सम्भवतः ये विश्वास इसलिये होगा क्योंकि संसार में एक समय लोहे को शुभ सम्मोहक माना जाता था।

अमंगल की बात करने पर काली बिल्ली के दिखने के अशुभ प्रभाव को लगभग सबसे पुराना कहा जा सकता है। मध्यकाल में लोग डाइनों में विश्वास करते थे तथा समझा जाता था कि डाइनें और दुरात्मायें काली बिल्ली का रूप धारण कर विचरती हैं आज भी काली बिल्ली को देख या उसके रास्ता काटने पर अधिकतर लोग अमंगलकारी मानते हैं।

इसी प्रकार का एक अन्धविश्वास टूटे शीशे से भी जुड़ा है। टूटे शीशे को अमंगल-कारी समझा जाता है। प्राचीन ग्रीस में ऐसा विश्वास था कि शीशे में मनुष्य भगवान की इच्छा को देखता है तथा अचानक शीशे के टूटने से समझा जाता था कि बुरा भविष्य न देखा जाये इसलिये भगवान ने इस व्यक्ति का शीशा तोड़ दिया।

रोमन लोग विश्वास करते थे कि हर व्यक्ति का स्वास्थ्य हर साल में बदलता है तथा क्योंकि अपना स्वास्थ्य हर व्यक्ति शीशे में देखता था सो इसके टूटने का अर्थ था कि अगले वर्ष इस व्यक्ति का स्वास्थ्य भी टूटा रहेगा।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल-पिलपिल
सुपरमैन सिलबिल
और
कमला बकरी
हम दोनों सुबह से ही आसमान में चक्कर लगा रहे हैं। जब से अपना याड़ी सिलबिल सुपरमैन बना है हमें बहुत सहूलियतें हो गयी हैं। हम आजकल रोज सुबह बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने निकल पड़ते हैं। मुझे मुफ्त में सवारी मिल जाती है।
दुनिया में दुखियों का पता लगाना हर सुपरमैं का पहला कर्तव्य है।
राम राम जी, हमने आसमान से आपको यहां उदास घूमते देखा। आपकी उदासी का पता करने हम नीचे उतर गये। आप हमको अपनी समस्या बताइये, हम हल कर देंगे।
आप लोग हैं कौन ? इस तरह हवा में इन्सान थोड़े ही उड़ सकता है यह कोई छलावा है। आप लोग भूत प्रेत हैं ?
हम न तो भूत हैं, न प्रेत, खालिस इन्सान हैं। नकली साबित करने वाले को १००० रुपये इनाम। आप काके के ढाबे से एक प्लेट चिकन करी लाकर हमारे सामने रख दीजिए और देखें किस तरह हमारे मुंह से लार टपकती है। भूतों को भूख थोड़े ही लगती है।
यह अपना याड़ी सुपरमैन सिलबिल है न ! यह देखने में राजनारायण लगता है लेकिन ऐसा नहीं है। यह सुपरमैन है। बड़ा से बड़ा काम चुटकियों में करना इसके बायें हाथ का खेल है। मुसीबत में पड़े लोगों की मदद करने का इसने बीड़ा उठा रखा है। तुम अपनी मुश्किल बताओ।
मेरी बकरी खो गयी है। क्या यह उसको ढूंढ़ सकते हैं ? सुबह से उसे खोजता फिर रहा हूं।
आपका काम हो जायेगा लेकिन पहले कागजी कार्यवाही पू करनी पड़ेगी। रजिस्टर में सारी रिपोर्ट दर्ज करनी पड़ेगी बकरी की उम्र क्या है, उसका नाम, वह कहां तक पढ़ी है, व लंच, डिनर में क्या खाती है, आइसक्रीम खाने का उसे शौक है य नहीं, पिक्चरें देखती है या नहीं, किस पार्टी को वह समर्थन देत वगैरह।
आप मजाक कर रहे हैं या यह बातें सचमुच बतानी पड़ेंगी।


तुम इसको मजाक कह रहे हो ? तुम्हारे जैसे लोगों की वजह से ही हिन्दुस्तान मार खा गया । दो सौ साल अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ी । कागजी कार्यवाही का महत्व नहीं जानते तुम । जब तक देश का बच्चा-बच्चा कागजी कार्यवाही को बढ़ावा नहीं देगा देश तरक्की नहीं कर सकता । डुप्लीकेट फार्म भरना हमारे लिए इतना ही जरूरी है जितना विवाहित पत्नी की मांग में सिन्दूर भरना । फायल और रजिस्टर कलयुग में भगवान का अवतार हैं । जब कागजी घोड़े दौड़ते हैं तो देश की गाड़ी कच्ची सड़क पर हिचकोले खाते सुनहरे भविष्य की ओर चल पड़ती है । विलायत के लोग बगैर फार्म भरे कोई काम नहीं करते । जागो, फार्म भर कर हमको एक नए समाज की रचना करनी है ।
बड़े-बड़े नेता आते हैं चले जाते हैं, लेकिन फायल और ट्रिप्लीकेट फार्म का रखवाला क्लर्क वहां डटा रहता है । उसे न तलवार काट सकती है और न हवा उड़ा सकती है, न पानी डुबो सकता है और न ही आग जला सकती है । क्लर्क बाबू अजर अमर हैं ।
MADE IN INDIA
न ये चाँद होगा, न तारे रहेंगे । मगर क्लर्क और फायल हमेशा रहेंगे ।
बाबू जी मैं समझ गया कि कागजी कार्यवाही कितनी जरूरी है ।
मुझे अपनी सुपर दृष्टि का प्रयोग करके चारों तरफ देखना है कि वह बकरी कमला कहां है ।
अपने याड़ी सुपरमैन की आंखों से लेजर बीम निकल रही है । देखा ? इसकी सुपर नजर चारों तरफ सौ-सौ मील दूर तक देख सकती है । दिल्ली दूरदर्शन के कार्यक्रम इतनी दूर नहीं पहुँचते जितनी इसकी नजर जाती है, दिल्ली टी० वी० वाले अपने टॉवर पर इसे बिठा दें तो दिल्ली दूरदर्शन ताशकन्द पीकिंग और बगदाद तक दिखाई देगा ।


अभी तो मैंने इसकी सुपर आई साइट का पूरा ब्यौरा नहीं दिया। सुपर आई साइट से मिली सूचना इसके दिमाग में प्रोसेस होगी और···और सारी सूचना टेप पर अंकित होकर इसके बायें कान से बाहर निकलेगी जैसे कम्प्यूटर से टेप निकलता है।
इस सारी सूचना के आधार पर पन्द्रह मिनट में हमें पता लग जायेगा कि बकरी कहां है···यह देखो।
बकरी यहां से पांच किलो मीटर दूर खेतों के पास एक झाड़ी की बगल में घास चर रही है। ओ. के. राजर···मैसेज कम्पलीट। अब चलो वहां।
सुपर मैन सुपर स्पीड से जैट फाइटर की तरह वहां पहुंच जाता है।
कब तक खैर मनाती बकरी की मां ?
कमला, जब से तू घर छोड़ कर गयी घर वाले बहुत दुखी हैं। मां सख्त बीमार है फौरन चली आओ। तुम्हारी सब गलतियां हमने माफ कर दी हैं। कमला का पता देने वाले को पचास रु० इनाम और आने जाने का खर्चा।
शुक्र है यह बकरी फिल्म स्टार बनने बम्बई नही गयी।
बगैर मेरी इजाजत के तुम इस जंगल से बकरी क्यों ले जा रहे हो ? यह बकरी तो मैंने लंच के लिए छोड़ रखी थी। इसे चुपचाप मेरे हवाले कर दो वरना अच्छा नहीं होगा।
लल्लू राम की है। हम बकरी लौटाने जा रहे हैं।
तुम आदमी हो या लल्लू ? मैं क्या कह रहा हूँ बकरी मेरे हवाले कर दो। नीली छतरी वाले ने इस बकरी पर मेरी मोहर लगा रखी है। मैं तुम्हें पांच मिनट का समय देता हूं।



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए ।

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

गिरते हुए वार करना

यदि गिरने का आपने अच्छी तरह अभ्यास कर लिया है तो आप गिरते-गिरते दुश्मन पर वार भी कर सकते हैं। आपकी इस असाधारण फुर्ती को देख वह भौंचक्का रह जायेगा।

मान लीजिए, दुश्मन आपको मारने तेजी से आपकी ओर आ रहा है तो ऐसे समय साहस से काम लीजिए। जैसे वह तेजी से आकर आपको धक्का दे या आपका गला पकड़ ले तो आप दोनों हाथों से उसका गिरेबान या भुजायें थाम लीजिए और पीछे गिरने की दिशा में झुककर अपना एक पैर विरोधी के पेट पर या छाती पर रखकर उसे अपनी ओर पीछे गिरने की दिशा में खींचते जाइए और अपने शरीर की स्थिति को पीछे गिरने के सही ढंग की स्थिति में लाते जाइए। ऐसा करने से दुश्मन अपना संतुलन खो बैठेगा और आपकी ओर झुकता चला जाएगा। जैसे ही आपके कूल्हे और पीठ जमीन पर लगें—आप शत्रु के पेट पर रखे हुए पैर से उसे अपने सिर से पीछे की ओर धकेलिए। ऐसा करते समय उसे हाथों से अपनी ओर खींचिए, शत्रु हवा में गुलाँट खाता हुआ आपके सिर की ओर बुरी तरह गिर पड़ेगा। जब तक वह संभले, आप फुर्ती से सही ढंग से उठते हुए उस पर दूसरा वार कर उसे काबू में कर लीजिए।

यदि शत्रु आप पर चाकू या अन्य किसी हथियार से वार करना चाहता है तो अपना एक हाथ तथा एक पैर को कोहनी तथा घुटने से मोड़कर जमीन पर एक करवट में गिर जाइए और दूसरी टांग को उछालते हुए दुश्मन के पेट या छुरे वाले हाथ की कलाई पर जोर से मारिये। क्योंकि पैर की मार लम्बी होती है अतः दुश्मन इससे पहले कि पास आकर वार करे आपकी टांग की लम्बी मार उसे दूर पर ही रोक कर मजा चखा देगी।

शत्रु के वार को रोकना

हाथ से वार को रोकना—यदि विरोधी सामने से आकर अपने घूंसे का प्रहार आपके सिर अथवा मुंह पर करना चाहे तो अपनी कलाई या मुट्ठी से उसका वार रोकें और अपने दूसरे हाथ के घूंसे का प्रहार उसके पेट पर करें।

लाठी का प्रहार रोकना

इसी प्रकार सिर के ऊपर पड़ रही लाठी का प्रहार भी आप अपनी कलाई पर रोक सकते हैं। अभ्यास द्वारा आपकी कलाई मजबूत तो हो ही चुकी होती है। अतः लाठी का प्रहार आप आसानी से हाथ पर रोक सकते हैं। एक हाथ से प्रहार रोक कर दूसरे हाथ से फुर्ती से लाठी पकड़ कर अपनी ओर खींचें। ऐसा करने से विरोधी आपको अपनी ओर खींचेगा। तब आप अपने पैर या घुटने की चोट उसके पेट पर कर सकते हैं।



पेट पर किया प्रहार रोकना

जैसे ही दुश्मन आपके पेट या छाती पर सीधा घूंसा मारने वाला हो—आप तुरन्त एक करवट होकर अपनी कलाई द्वारा घूंसे को रोककर सुविधानुसार अपने दूसरे हाथ या पैर से उस पर वार कीजिए। वार रोकते समय आपका हाथ कोहनी से मुड़ा होना चाहिए तथा आपके चेहरे के सामने होना चाहिए।

इसी प्रकार छाती या कनपटी पर हो रहे लाठी के प्रहार को भी तिरछे होकर कलाई पर रोकें और प्रत्याक्रमण का तुरन्त लाभ उठायें। अपने मुड़े हुए हाथ को छाती के सामने रखिये अन्यथा तेजी से पड़ रहा वार छाती पर लग सकता है। याद रखें गलत ढंग से वार रोकने पर लाठी का सिरा आपकी छाती पर लग सकता है।

पैर का प्रहार रोकना

यदि शत्रु अपने पैर की ठोकर आपके पेट या कमर पर मारना चाहता है तो कैराटे चाप से पैर की ठोकर तिरछे होकर रोकें। साथ ही पैर यदि पकड़ाई में आ जाए तो उसे फुर्ती से ऊंचा उठा दें। शत्रु सिर के बल गिर पड़ेगा।

दोनों हाथों से वार रोकना

मान लीजिए यदि शत्रु आपके सिर पर किसी चौड़ी वस्तु जैसे कुर्सी या स्टूल आदि से प्रहार करना चाहे तो दोनों हाथों को कोहनी से मोड़ कर सिर के ऊपर कर लें और वार को कलाइयों पर रोक लें। सा ही अपने घुटने का प्रहार शत्रु के पैर पर क कर दें।

कलाई द्वारा वार रोकने का काम ज्या पड़ता है। क्योंकि कलाई का भाग हम शरीर के अग्रभाग जैसे छाती, मुंह, पेट, त कमर आदि के आगे आसानी से आ जा है और कलाई की लम्बाई पूरी तरह से उ गह की सुरक्षा कर लेती है।

इसलिए यह अति आवश्यक है वार रोकने के लिए आप अपनी कलाई दोनों किनारों को अभ्यास द्वारा कठो व मजबूत बना लें ताकि लाठी, बल्लम आ हथियारों के तेज वार को भी आपकी कल आसानी से झेल जाये। पिछले अध्यायों



कलाई के उन दोनों सिरों को दर्शाया गया जिन्हें आप अभ्यास द्वारा मजबूत करें।

आत्मरक्षा के लिये जूडो के दांव

कैराटे की तरह जूडो भी बिना हथिय के आक्रमण प्रत्याक्रमण करने की बेहतरीन कला है। कैराटे में अधिकार ह पैर से ही बचाव तथा आक्रमण किया जात जूडो में हाथ-पैर से लड़ने के आलावा उठा-प के दांव भी सीखने पड़ते हैं। मोटे तौर यह समझ लें कि कैराटे और जूडो में उ ही अंतर है जितना बाक्सिंग तथा फ्री स्टा कुश्ती में होता है।

जूडो जापान का बहुत प्रिय खेल जूडो जुजुत्सु (जापान का एक प्राचीन Jujutsu) नामक जापान के एक प्राचीन का ही विकसित रूप है। जूडो का प्रथम प्रचार व प्रचलन करने में स्व डाक्टर जिगारी कानो का बहुत बड़ा दान रहा है।

जूडो का अर्थ है 'जू' (Ju)—य कोमल तथा 'डो' (do)—यानी रास्ता सिद्धांत। इसी तरह प्राचीन जुजुत्सु का लगभग यही अर्थ निकलता है—

जु+जुत्सु यानी कोमल+कला अभ्यास=कोमल+कला—।

बन्द करो बकवास



दिल में छुपा के प्यार का तूफान ले चले ।
बन्द करो बकवास. ये बताओ कि साथ-साथ चम्मच कहां से छुपा के कहां ले चले ।
जीना यहां. मरना यहां. इसके सिवा जाना कहां ।
बन्द करो बकवास. जीने मरने की बात छोड़ो. एक बार और फेल हो गए तो स्कूल से निकाल दिये जाओगे ।
CLASS X
रसात में हम से मिले ुम रे सजन तुम से मिले हम !
बन्द करो बकवास. पहले छत्तरी ठीक कराओ फिर मिलना बरसात में ।



—डॉ ० राम सिया सिंह

'साहब, हमारे मुहल्ले में थोड़ी देर में कत्ल होने वाला है । कुछ बदमाश गुंडे छुरी-चाकू से लैस होकर जार्ज को घर में घेर लिये हैं । वह किसी तरह जान बचाने के लिये घर में बन्द है और वहीं से मदद के लिये चिल्ला रहा है । उसका कोई कसूर नहीं है । उसका कसूर है तो सिर्फ यही कि उसकी बहन बहुत ही खूबसूरत है । जल्दी से चलिये तो उसकी जान बच सकती है । गुंडे अगर दरवाजा तोड़कर अन्दर घुस गये तो उसकी एकमात्र बहन की इज्जत भी मिट्टी में मिल जाएगी ।' —अब्दुल रहीम हड़बड़ी में इधर-उधर मदद के लिये चिल्लाता फिर रहा था और अब चौराहे पर एक सिपाही के सामने गिड़गिड़ा रहा था ।

सिपाही ने अब्दुल को डाँटते हुए कहा —'इस वारदात से मेरा क्या वास्ता ? जानते नहीं, मैं मंत्री जी की सभा में उनकी सुरक्षा के लिये यहाँ तैनात हूं । अगर मैं वहां चला जाऊंगा और मंत्री जी को कुछ हो गया तो क्या तुम जवाबदार होगे ?'

अब्दुल अब किसी दूसरे मददगार की तलाश में इधर-उधर भटकने लगा । तभी उसकी नजर श्वेतवस्त्रधारी एक दूसरे सिपाही पर पड़ी । वह गिड़गिड़ाने लगा—'हजूर, आप ही चलिये, उस बेचारे की मदद कीजिये । थोड़ी ही देर में गुंडे उसे मार डालेंगे । और उसकी बहन का सतीत्व लूट लेंगे ।'

'मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता । मैं ट्रैफिक पुलिस का सिपाही हूं ।' —उसे दो टूक जवाब मिला ।

वह हड़बड़ा कर मंच के पास पहुंचकर मंत्री महोदय को संबोधित करके वही बात दुहराने लगा—'माई बाप, आप ही रक्षा कीजिये जार्ज की और उसकी अकेली बहन की ।'

'क्या जार्ज हमारी पार्टी का आदमी है ?'—मन्त्री जी ने स्थानीय नेता जी से परामर्श किया ।

'जी नहीं । पिछले चुनाव में उसने हमारी विरोधी पार्टी के उम्मीदवार का प्रचार किया था ।'—नेता जी का जवाब था ।

तब मंत्री जी ने कहा—'तब जार्ज से हमारा क्या वास्ता ? इस आदमी से कह दो, हम अभी उसकी मदद नहीं कर सकते । हां, अगर विधान सभा में इस पर कोई सवाल उठा, तब हम एक जांच आयोग जरूर बिठाल देंगे, इसका वादा करते हैं ।'

इस पर अब्दुल पुनः इधर-उधर मदद की तलाश में भटकने लगा ।

तभी उसे विरोधी पार्टी के श्वेतवस्त्र धारी नेता जी सामने दिखे । अब्दुल का चेहरा खुशी से खिल उठा—'मंत्री जी ने मदद नहीं की तो क्या हुआ, विरोधी पार्टी के नेता जी तो जरूर मदद करेंगे ।'

उसने विरोधी पार्टी के नेता जी के सामने अपनी फरियाद दुहराई तो वे बोले— 'देखो भाई अभी मुझे बहुत जरूरी काम निपटाना है । तुम देख रहे हो न, सामने मंत्री जी की सभा हो रही है । हमें अभी मंत्री जी को काला झंडा दिखाना है और नारे लगाकर उनका ध्यान शहर में फैली गुंडागर्दी की ओर आकर्षित करना है । और हां, तुम्हें याद होगा, जार्ज ने हमारी मदद पिछले चुनाव में जरूर की थी । इसके लिए हम उसका शुक्रिया अदा करते हैं । मगर हम चुनाव में जीत नहीं पाये, इसलिए फिलहाल हम उसकी कोई मदद नहीं कर सकते । हां अगर अगले चुनाव में उसने हमें जिता दिया, तब हम जरूर उसकी पूरी-पूरी मदद करेंगे, हम यह वादा करते हैं ।'निराश अब्दुल पागलों जैसा चीखता चिल्लाता मदद के लिए इधर-उधर फिर रहा था तभी उसे एक थानेदार साहब खाकी वर्दी में दिखे । वह थानेदार साहब से गिड़गिड़ाया तो वे मूंछों पर ताव देते हुए बोले—'अच्छा, जार्ज किस मुहल्ले में रहता है ?'

'शंकरगंज में ।'

'शंकरगंज मेरे थाने के क्षेत्र में नहीं आता । मेरा थाना नं० ३ है । दूसरे थ[ाने] के क्षेत्र की वारदात से मेरा क्या वास्ता [?] मैं इसमें दखलंदाजी क्यों करूं ? अफसोस [मैं] तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता । तु[म] अगर कोई मदद चाहते हो तो थाना नं० के थानेदार से सीधा संपर्क करो ।'

अब्दुल को जैसे डूबते को तिनके [का] सहारा मिला । वह भगा-भगा थाना नं० में पहुंचा ।

पता चला कि थानेदार साहब नगर [में] आई मशहूर नौटंकी देखने दलबल के सा[थ] गये हुए हैं।थाने में मात्र दो सिपाही बचे जो चारपाई पर पसरे एक दूसरे को बी[ड़ी] पीने-पिलाने का आदान प्रदान कर रहे थे ।

अब्दुल ने सारा किस्सा कह सुनाय[ा] और मदद की फरियाद की तो बीड़ी की क[श] खींचकर धुआं निकालते हुए कान्स्टेबि[ल] साहब ने कहा—'देखो भाई, जब तक को[ई] जुर्म हो न जाय, हम उसकी तफ्तीश (जाँच पड़ताल) कैसे कर सकते हैं ? हां अगर हत्[या] या बलात्कार हो जाए, तब हम जरू[र] तुम्हारे दोस्त जार्ज की कोई मदद कर सक[ते] हैं । अभी तुम हमारे आराम में खलल [न] डालो ।'



निराश और व्याकुल अब्दुल उस जग[ह] पहुंचा जहां जार्ज रहता था । अब तक गुं[डे] उसके घर के दरवाजे तोड़कर अन्दर घुस ग[ये] थे । अन्दर की चीख-पुकार और छीना-झपट से आसपास काफी लोग इकट्ठे हो गये थे ।

अब्दुल वहां एकत्रित जनों को संबोधि[त] कर कहने लगा—'भाइयों गुंडे जार्ज को मा[र] डाल रहे हैं और उसकी बहन की इज्जत लू[ट] रहे हैं और आप लोग हैं कि खड़े-खड़े तमाश[ा] देख रहे हैं ।'

'तो तुम क्या चाहते हो कि हम भ[ी] गुंडों के साथ घर में घुसकर गुंडागर्दी करें न बाबा, यह हमसे न हो सकेगा ।'

'मैं तो जार्ज की मदद के लिए क[ह] रहा हूं ।'

'देखो भाई, जार्ज से हमारा क्या वास्ता ? अपनी जान सभी को प्यारी होत[ी है]

(शेष पृष्ठ ३२ पर)



फूल गिरे हैं गुलशन गुलशन
प्रोग्राम देखने वालों को खबस्सुम का नमस्कार। ग्राज फूल गिरे हैं गुलशन-गुलशन के प्रोग्राम में ग्रापकी मुलाकात एक ऐसी ग्रभिनेत्री से कराई जा रही है जो ग्रपनी ग्रभिनयकला से पिछले पंद्रह सालों से हिन्दुस्तान वालों के दिमागी स्क्रीन पर छायी रही है। जिनके फैनों की संख्या करोड़ों में है। हजारों-लाखों की भीड़ उनकी ग्रभिनयकला का नमूना देखने टूट पड़ती है। जान गये ग्राप ? नहीं ? पहले उनकी फिल्मों के कुछ ग्रंश देखिये।
सबसे पहले तो बताइये कि ग्राप लोगों के दिमागी पर्दे पर कैसे ग्राई ? प्रेरणा कहां से मिली ?
मेरे पिता ग्रौर दादा तथा मां, गरज यह कि सबके सब पॉलिटिकल स्क्रीन पर थे। उनका ग्रसर मुझ पर भी पड़ा, मुझे भी पॉलिटिकल स्क्रीन से नेचुरल इंटरेस्ट पैदा हुग्रा।
ग्रब मैं ग्रापसे ग्रापकी सबसे चर्चित ग्रौर उन्नीस महीने तक बॉक्स ग्राफिस के पुराने रिकार्ड तोड़ने वाली फिल्म ऐमरजेंसी-ऐमरजेंसी के बारे में पूछना चाहती हूँ। १९ महीने इस तरह चलने के बाद वह एकदम सिनेमा घरों से क्यों उतर गयी ?
मेरे ख्याल में ग्रापने ग्रगर फिल्म देखी है तो पता होगा कि उसमें नसबन्दी का एक सीन था। लोगों को वह सीन पसन्द नहीं ग्राया। बस उस एक सीन के कारण बाद में पिक्चर पिट गयी। हमारे दर्शक ग्रभी पुराने टेस्ट के हैं। वह सब फिल्मों में मार पीट, ड्रामा ग्रौर कैब्रे डास ही देखना चाहते हैं। कोई नया बोल्ड एक्सपेरीमेंट देखना पसन्द नहीं करते।


कुछ लोग कहते हैं कि मेन हीरो की जगह आपने इस फिलम में अपने लड़के के साइड रोल को ज्यादा महत्व दिया इसलिये पिक्चर फेल हुई ।
यह सब गलत है । उसका तो सिर्फ छोटा सा कमि-डियन का रोल था।
इस फिलम का एक सीन दर्शकों को हम दिखा दें ।
आप कई बार स्टेज पर आकर रोई हैं, जिससे लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा । कुछ विरोधी ऐक्टरों का कहना है कि आप रोने के लिये ग्लेसरीन का इस्तेमाल करती हैं । इसमें कहां तक सचाई है ?
मेरे आंसू हमेशा सच्चे रहे हैं ।
मैं जिस रोल में आती हूं उसमें खो जाती हूं । रोने का सीन आये तो सचमुच ही रोना आता है मुझे ।
रोना
अब आपकी ताजा फिल्मों पर चर्चा हो जाये । कई महीनों से आपकी आने वाली फिल्म "लव इन स्पेशल कोर्ट" बन रही है । फिल्म के प्रोड्यूसर और डायरेक्टरों ने अखबार में ब्यान में कहा है कि आप इस फिल्म को पूरा करने में पूरा सहयोग नहीं दे रही हैं । इससे पहले की अधूरी फिल्म शाह कमीशन की शूटिंग के लिये तो आप एक बार भी सेट पर ठीक टायम से नहीं पहुँची । एक बार पहुँची भी तो गला खराब होने की शिकायत करके आपने डायलॉग बोलने से इन्कार कर दिया । किस कारण आपने यह रवैय्या अपनाया ।
शाह कमीशन फिल्म की कहानी मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं आई । उसमें काम करके मैं अपनी साख नहीं खोना चाहती थी ।
'लव इन स्पेशल कोर्ट फिल्म में मुझे जो डेटें दी जा रही हैं वह मुझे सूट नहीं करतीं । डायरेक्टर भी मेरी पसन्द का नहीं । प्रोड्यूसर फिल्म को जल्दी-जल्दी दिन रात शूटिंग करके पूरी करना चाहते हैं । मेरे पास इतना टायम नहीं है । मैं और भी कई फिल्मों में काम कर रही हूं ।
अभी हाल में ही आपकी सबसे ताजा फिल्म "चौबीस दिन का बादशाह" आई थी, इसमें आपने फिल्म के निर्देशन का रोल किया था । आपने इस फिल्म के हीरो चरणसिंह को अपनी अंगुलियों पर खूब नचाया । फिल्म केवल २४ दिन चली लेकिन उसमें जो डांस था उसे सभी ने पसंद किया । निर्देशन का शौक कहां से पैदा हुआ आपको ?


मैं साबित करना चाहती हूं कि औरतें सब काम कर सकती हैं केवल एक्टिंग ही नहीं। वह फिल्में डायरेक्ट भी कर सकती हैं। मुझे खुशी है कि चौबीस दिन का बादशाह फिल्म के डांस लोगों को पसन्द आये। खासकर इसलिये कि लोगों में डांस अब पहले से ज्यादा लोकप्रिय हो रहे हैं। जब पार्लियामेंट की फिल्म चल रही होती है तो दर्शक दीर्घा में आज कल नर्तकियां जैसे सोनलमान सिंह, यामिनी कृष्णमूर्ति, सुधा शर्मा, इन्द्राणी रहमान और नचिकेता वगैरह सहज ही नजर आती हैं।
अब मैं दर्शकों को चौबीस दिन का राजा फिल्म का एक दृश्य दिखाना चाहती हूं ताकि लोग टी.वी. के पर्दे पर आपके निर्देशन का कमाल देख सकें…टिच।
24 दिन का बादशाह
अभी एक और मेरी फिल्म 'जनता का बाजा' पूरी होने वाली है। उसमें भी इसी तरह के कई डांस हैं। फिल्म के हीरो जगजीवनराम हैं। दर्शकों को यह फिल्म भी पसन्द आयेगी।
जरूर पसन्द आयेगी। सुना है जौहर-महमूद इन बंगलौर फिल्म में पहले नायक देवराज अर्स को लिया गया था। लेकिन आपने उन्हें प्रोड्यूसर पर दबाव डालकर फिल्म से निकाल दिया और कुछ नये चेहरों को मुख्य रोल दिलवा दिये।
यह भी मुझ पर गलत आरोप है। देवराज अर्स ने खुद ही फिल्म छोड़ दी थी। वह अब भी हीरो का रोल करना चाहता था जब कि मैं उसे विलेन के लंगड़े चाचे का रोल दिलवा रही थी। देवानन्द, राजकपूर, अशोक वगैरह सबने हीरो के रोल करने छोड़ दिये हैं तो उसे भी छोड़ना चाहिये था। अब डबल रोल वाली फिल्मों के दिन नहीं रहे।
अच्छा तो इन्दिरा जी, आपका मेरी और दर्शकों की तरफ से स्टूडियो आकर दिलचस्प बातचीत करने का बहुत-बहुत शुक्रिया। हमें पता है कि आपकी आने वाली मल्टीस्टार फिल्म 'मध्यावधी चुनाव" के लिये आप कितनी व्यस्त हैं फिर भी आपने समय निकाला। दर्शकों को मध्यावधी चुनाव फिल्म का बहुत बेसब्री से इन्तजार रहेगा। सबको पता है कि इस फिल्म में आपका लीडिंग रोल होगा। हमारी तरफ से आपको शुभकामनायें।"
धन्यवाद
A BOMBAY T.V. PRESENTATION

(पृष्ठ २८ से आगे)

है। हम अभी कुछ नहीं कर सकते। हां, अगर मुकदमा चला तो गवाही जरूर देंगे कि आज की रात को यहां कुछ हुआ था।' —दर्शकों में से आवाज आई।

अन्दर जार्ज की अन्तिम चीख निकल गई और उसकी बहन की सिसकियां भी बाहर सुनाई पड़ रही थीं।

बाहर खड़े दर्शक 'च च च च, अफसोस बेचारा गरीब मारा गया···। बड़ा ही नेक-दिल इंसान था, कभी किसी की ओर नजर उठाकर भी न देखा होगा।'—आदि-आदि सहानुभूति के शब्द व्यक्त कर रहे थे। अब्दुल का दिल भयंकर रूप से कचोट रहा था। पुनः थाना नं० २ की ओर दौड़ा दौड़ा भागा, अब तक थानेदार साहब नौटंकी देखकर दल-बल के साथ वापस आ चुके थे। अब्दुल की खुशी बढ़ी। वह थनेदार साहब के सामने गिड़गिड़ाने लगा—'हजूर, जल्दी चलिये, जार्ज का खून हो गया है और उसकी बहन से गुंडे बलात्कार कर रहे हैं। हो सकता है उसे भी मार डालें।'

थानेदार साहब ने मूंछों पर ताव देते हुए कहा—'हूं, तो तुम हो जार्ज के खैरख्वाह ! क्या नाम है तुम्हारा ?'

'अब्दुल रहीम।'

'तो तुम मुसलमान और वह ईसाई। जरूर उसकी बहन से तुम्हारा कोई नाजायज संबंध होगा, तभी तुम इतनी हमदर्दी जता रहे हो नहीं तो तुम्हारा उससे क्या वास्ता ?'

'नहीं, माई-बाप ! वह हमारे मुहल्ले में रहता है, इससे अधिक मेरा और कोई वास्ता नहीं है। एक मनुष्य होने के नाते ही में उसकी मदद करना चाहता था।'

थानेदार साहब अकड़ कर बोले—'कम्बख्त मुहल्ले में तो और भी हजारों मनुष्य रहते हैं। फिर वे क्यों यहां नहीं चले आये ? तुम्हीं क्यों आये हो ? जरूर वह तुम्हारी कोई नाजायज···।'

'माई बाप···मैं कसम खाकर कहता हूं, मेरा उससे कोई भी नाजायज़ संबंध नहीं है।'—अब्दुल गिड़गिड़ाया।

थानेदार ने हेड कांस्टेबिल को बुलाकर कहा—'पकड़ लो इस कमीने को। बन्द कर दो और उल्टा लटका कर तब तक पिटाई करो, [illegible] यह कबूल न [illegible] कि उस लड़की [illegible] इसका कोई नाजायज संबंध था।'

'नहीं माई-बाप, मेरा किसी से कोई नाजायज संबंध नहीं है, मैं कसम खाकर कहता हूं कि जार्ज की बहन मेरी बहन के समान ही है।'

'यह सफाई तो तुम अदालत में देना। अभी तो थाने में तुम्हारी सफाई होगी।'

●

हंगरी में खाने पीने की हर चीज के लिए घंटों क्यू में खड़ा रहना पड़ता था। एक बार एक व्यक्ति एक क्यू में खड़ा था। क्यू सरकने का नाम ही नहीं ले रही थी अन्त में खीज कर वह व्यक्ति क्यू से निकल गया और अपने से आगे खड़े व्यक्ति से बोला, 'मैं इन क्यूओं से तंग आ गया हूं। मैं अभी प्रधान मंत्री को गोली मारने जा रहा हूं।'

इतना कहकर वह चला गया ? दो घण्टे बाद मुंह लटका कर लौटा। क्यू में खड़े व्यक्ति ने उससे पूछा कि क्या हुआ ! निराशा भरे स्वर में उसने उत्तर दिया, 'यार वहां तो इससे भी लम्बी लाइन लगी हुई है।'

●

एक मरीज डाक्टर से बोला, डाक्टर साहब, 'मेरा जीना हराम हो गया है पता नहीं क्यों कोई मुझसे बात तक नहीं करना चाहता। दोस्त, घर वाले, अजनबी सब मुझसे मुंह फेर लेते हैं। कोई एक शब्द भी नहीं बोलता। ऐसा क्यों है डाक्टर ? ऐसा क्यों ?'

हा हा हा

डाक्टर ने घंटी बजाई। नर्स आई तो डाक्टर ने नर्स से कहा, 'अगले मरीज को बुलाओ।'

●

पत्नी, 'सुना है पहले फिल्मों में औरतें नहीं होती थी मर्द ही जनाना भेष में औरतों का पार्ट किया करते थे'।

पति, 'हां वह खमोश फिल्मों का जमाना था और औरतें कभी खामोश रह सकती हैं ?'

●

एक पर्वतारोही पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते फिसल गया। अचानक उसके हाथ में झाड़ी की एक टहनी आ गयी, वह उसे पकड़ अटक गया। नीचे सैंकड़ों फीट गहरी खाई थी। वह चिल्लाया, 'बचाओ ! बचाओ !'

अचानक ऊपर से गहरी आवाज आई, 'मैं तुम्हें बचाऊंगा, मैं ईश्वर हूं। लेकिन पहले तुम्हें मुझ पर विश्वास करना होगा।'

व्यक्ति बोला, 'ठीक है ! ठीक है ! मुझे आप पर विश्वास है।'

ईश्वर ने कहा, 'टहनी छोड़ दो।'

व्यक्ति कुछ देर की चुप्पी के बाद चिल्लाया, 'अरे ऊपर और कोई है ?'

तर्क-कुतर्क

दिनेस राज बाज्राचार्य—काठमाण्डो
तर्क— मैं तुम्हें क्या कहूं दोस्त या दुश्मन
कुतर्क—जो भी हो तुम मुझे डैडी कहना।
तर्क—तुम्हारी तबियत कैसी है ?
कुतर्क—राजेश खन्ना जैसी।

'गोयल कुमार जोहरी'
तर्क—आज मैंने मास्टर जी से मार खाई
कुतर्क—खट्टी थी या मीठी।
तर्क—वाह ! जलेबियां बहुत मीठी हैं।
कुतर्क—क्या पहले नमकीन होती थीं ?
तर्क—उसको तीन दिन बाद पेट के लि[ए] रोटी मिली।
कुतर्क—क्या पहले पीठ के लिए मिलत[ी] थी।

रूपेन्द्र कुमार साव—राजनांदगांव
तर्क—मैं बैंक की मदद से अपने पैरों प[र] खड़ा हो गया।
कुतर्क—आप पहले लंगड़े थे।

राजकुमार कालरा—सहारनपुर
तर्क—हमारा टी० वी० चल रहा है।
कुतर्क—कितनी दूर पहुंच गया है।

उषा शर्मा—गाजियाबाद
तर्क—परीक्षा में प्रश्न बहुत भारी थे।
कुतर्क—तुमने उन्हें क्रेन से उठाया।
तर्क—कल कपिलदेव ने एक छक्का मारा
कुतर्क—तो उसे कितने महीने की कै[द] हुई।
तर्क—वह कितनी देर से मेरे कान खा रह[ा] है।
कुतर्क—क्या अभी तक उसका पेट नह[ीं] भरा।

सुरिन्द्र सिंह बबूल—मनीपुर
तर्क—देखो कितनी अच्छी शाम है।
कुतर्क—कितनी ?

ओम प्रकाश सहगल—फरीदाबाद
तर्क—आपने मुझे पहचाना ?
कुतर्क—जी हां ! याद आया, उस [दि]न धोबी जिस पर कपड़े लाद कर जा रहा था आप ही थे न।
तर्क—मेरा दिल जल रहा है।
कुतर्क—फायरब्रिगेड बुलावा लो।
तर्क—भगवान से क्या मांगू ?
कुतर्क—मांग लो दो चार तन्दूरी मुर्गे।

तर्क-कुतर्क
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


?
सवाल
यह है?
बस मुझे थोडा सा टैंट में घुसने दो.
आर.एस.एस. के प्रधान बाला जी देवरस ने कहा है कि आर.एस.एस. दस साल तक हुकूमत बनाने के योग्य हो जाएगी.
जनता पार्टी
आर० एस० एस०
एक झंडा, एक नेता, एक पार्टी एक कटोरा, एक चमचा और खाने वाला एक ही मुंह ......! किसान नेता की इस से बड़ी डिक्टेटरशिप और क्या होगी?
होम मिनिस्टर ने कह तो दिया कि चुनाव के बीच शांती बनाए रखने के लिए विशेष प्रबंध किये जाएंगे.
पर लोग पूछते हैं .... आप बैठे कहां हैं हुजूर...?
सरकारी ऐलान
बिजली का संकट पानी का संकट डीज़ल का संकट सीमेंट का संकट पैट्रोल का संकट. इस सरकार का नाम तो काम चलाऊ की बजाये संकट बनाऊ सरकार होना चाहिये.
कांग्रेस अध्यक्ष देवराज अर्स ने चन्द्रशेखर और बाबू जगजीवन राम से प्रार्थना की है कि वह आने वाले तूफान से बचने के लिये कांग्रेस की छत्रछाया में आ जाएं.
अर्स कांग्रेस

(पृष्ठ ७ से आगे)

हुई चुप हो गई तो दुल्हा ने काकी को घूर कर कहा ।

'मारती क्यों हो जी ?'

दुल्हा के पास बैठे किसी सगे ने उसकी पीठ पर भी धप मारा और बोला—

'तू भी बोल उठा—चुपचाप बैठ ।'

दुल्हा भी मुंह बसूर कर रह गया । पंडित ने ठाकुर धर्मपाल को बुला कर कन्यादान कराया और फिर दोनों के फेरे होने लगे । ठाकुर धर्मपाल बहुत बेचैन नजर आ रहे थे—फेरे जितने धीरे हो रहे थे उन्हें उतना ही गुस्सा आ रहा था ।

रामदेई ने मुन्नी को जोर से लिपटा लिया और फूट-फूटकर रोने लगी···यशपाल की भी आंखें भीग गई थीं । मुन्नी रामदेई से लिपट कर रोती हुई बोली—

मां···अब मुझे कब घर बुलाओगी मां ?'

'चुप रह···रामदेई ने धीरे से कहा, ऐसी बात नहीं करते···बेटी ।'

'उफ फो···भई जल्दी करो ।' ठाकुर धर्मपाल झुंझला कर बोले ।

'हां भई···समधी ने चिंता भरे स्वर में कहा, 'जितनी जल्दी हो सके हम लोग पुल पर से गुजर जाएं वरना बड़ी परेशानी हो जाएगी ।'

'समधी जी···''यशपाल ने कहा, अभी दहेज तो लगा ही नहीं—क्या गाँव में···।'

'अजी दहेज क्या कहीं भागा जा रहा है ?' समधी ने कहा, 'आज नहीं तो कल पहुंच जाएगा—हम तो यह चाहते हैं कि जल्दी से पुल पार कर लें···अगर आज रात पुल न पार कर सके तो राम जाने दत्त की मां की क्या दशा होगी ? बेचारी वैसे ही बीमार है—बेटे के फेरों तक में न आ सकी ···उसकी नजरें दरवाजे पर ही लगी होंगी ।'

उन लोगों को जल्दी-जल्दी गाड़ियों में बिठाकर विदा कर दिया गया । गाड़ियां चल पड़ीं । धर्मपाल, रामदेई और यशपाल आंसू भरी आंखों से उन्हें जाते देखते रहे । गाड़ियां जल्दी-जल्दी भागने लगीं ।

दुल्हा-दुल्हन एक ही रथ में सवार थे । गाड़ी तेज चलने से मुन्नी गिरी पड़ रही थीं । उसने झट दत्त का हाथ कस कर पकड़ लिया···दत्त ने उसे संभाल कर कहा—

'घबराओ मत···मैं तुम्हें गिरने न दूंगा ।'

'तुम भी सम्भल कर बैठो ।' मुन्नी ने उसे और भी कस कर पकड़ लिया ।

थोड़ी देर बाद गाड़ियां पुल के पास पहुंची तो सबसे अगली गाड़ी के गाड़ीवान ने ऊंची आवाज में कहा—

'मालिक ! पुल तो घुटनों-घुटनों पानी में डूबा हुआ है ।'

सब गाड़ियां रुक गईं । अब वारिस भी तेज हो गई थी । समधी ने गाड़ी पर खड़े होकर देखा और जोर से बोले— .

'इधर-उधर की रेलिंग तो नजर आ रही है ।'

'हां मालिक···अभी रेलिंग नजर आ रही है ।'

'तो फिर जल्दी करो···निकल चलो ।'

'मालिक···बहुत खतरा है ।'

'चिंता मत करो···अभी पुल सलामत है ।'

अचानक आगे की ओर ऐसे जोर के धमाके हुए जैसे कई बम एक साथ फटे हों और साथ ही पुल का अगला भाग टूटकर पानी में जा गिरा । कई औरतें और बच्चे चीखें मारकर बेहोश हो गए । समधी जोर से चिल्लाए—

रोको—गाड़ियां रोक लो ।'

'बेटा···बूढ़े ने कांपती आवाज से कहा, 'जल्दी से गाड़ियां वापस कर लो ।'

समधी ने फिर जोर से चिल्लाकर कहा—

'गाड़ियां जल्दी से पीछे मोड़ो—'

पुल खासा चौड़ा था···गाड़ियां आसानी से मोड़ी जा सकती थीं लेकिन



फिर गाड़ियां पुल पर चढ़ गईं । पानी का बहाव इतना तेज था कि बैलों को पैर जमाने मुश्किल होने लगे थे । पानी ठाठें मारता हुआ चिंघाड़ रहा था···बारात में औरतें और बच्चे रोने लगे थे···मर्दों के दिल भी बुरी तरह धड़क रहे थे···।

'मुन्नी' और 'दत्त' ने एक दूसरे को कस कर पकड़ रखा था और दोनों डर से थर-थर कांप रहे थे । अब बारिश का जोर इतना बढ़ गया था कि कानों पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती थी···पुल पर प्रतिक्षण पानी बढ़ता जा रहा था । अब बैलों के पेट से पानी लगने लगा था और बैल बड़ी मुश्किल से रेंग रहे थे और अभी पुल आधा भी पार नहीं हुआ था । समधी का दिल जैसे डूबने लगा था उन्होंने अपने एक बूढ़े प्रियजन से कहा ।

'चाचा ! अब तो बहुत खतरा बढ़ गया है ।'

'मैं स्वयं भी देख रहा हूं बेटा ।'

पानी के बहाव के कारण बैलों ने एक इंच भी बढ़ना छोड़ दिया । गाड़ीवानों ने सांटे मार-मार कर उन्हें लहुलुहान कर दिया किंतु वह वहीं डटे रहे । समधी ने भयभीत कंप-कंपाते स्वर में बूढ़े से कहा—

'अब क्या होगा चाचा ?'

'अब तो एक ही तरीका है···गाड़ियां यहीं छोड़ दो और जल्दी से औरतों और बच्चों को लेकर वापस भागो । अगर भगवान ने और जीवन लिखा है तो बच जाएंगे वरना यह समझ लो कि पुल का यह भाग भी बस टूटने ही वाला ।'

ठाकुर साहब जोर-जोर से चिल्लाने लगे—

'गाड़ियां छोड़ दो और औरतों को लेकर गाड़ी में से उतर कर पीछे चलो···अपने पीछे की गाड़ी को भी यही —।'

फिर सबसे पहले समधी ही पानी में उतरे लेकिन पुल से पैर लगने के स्थान पर

(शेष पृष्ठ ३८ पर)



परिणाम

दीवाना कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० १० का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—मि० तरुण कुमार शर्मा टीचर्स कालोनी, क्वाटर नं० २०, मोदी नगर-२०१२०४

द्वितीय पुरस्कार—कुमारी भगवती देवी, १६/५६१ एच० बापा नगर हरध्यान सिह रोड, नई दिल्ली-११०००५.

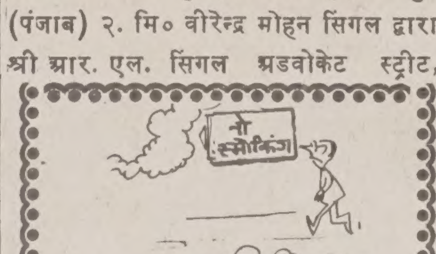
तृतीय पुरस्कार—मि० सतीश कुमार, १२, हकीकत नगर, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-११०००९.

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१, कुमारी नीता मारिया, २४/२, चर्च लेन इलाहबाद २. मि० अनुप कुमार गुप्ता, ५६, बलदेव पार्क, कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१. ३. मि० वोरेन्द्र कुमार कनोजिया, बजरंग डायर्स एण्ड ड्राई क्लीनर्स, २७२४ ओंकार नगर (ए) त्री नगर, दिल्ली-११००३५. ४. मि० नरेश कुमार शर्मा द्वारा श्री माधव प्रसाद शर्मा म. नं० ८/६५, शिवपथ, सिद्धार्थ नगर, रूपेनदेही (नेपाल) ५. मि. एस. अफसर साही द्वारा मुन्नार बोतल सोप, बानो मंजिल रोड, रांची-८३४००१ (बिहार)

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. मि० गुरमीत सिह जबल द्वारा सरदार अजीत सिह मेसर्स फाइन वुड एण्ड इंजिनियरिंग वर्क्स, सुतेहरी रोड, होशियारपुर (पंजाब) २. मि० वीरेन्द्र मोहन सिंगल द्वारा श्री आर. एल. सिंगल अडवोकेट स्ट्रीट,



धर्मपुरा फिरोजपुर सिटी (पंजाब) ३. मास्टर प्रदीप कुमार बंसल २०१, कालबा देवी रोड, बम्बई-४०००२.४. विक्की कुरेसी २७, जैनस रोड, लीलुह (हावरा) ५. सतनाम सिंह पुत्र सरदार जगजीत सिंह ५५२, ईस्ट मोहन नगर, अमृतसर (पंजाब)।

कैमल सर्टिफिकेट्स

१. मि० अखिलेश मनचन्दा, मनचन्दा क्लीनिक, ९६, दुर्गापुरी लोनी रोड, शाहदरा दिल्ली-११००३२. २. मि० विजय कुमार हाउस नं० ५९४, गली नं० १७, महाराणा प्रताप, जोशी रोड़, करौल बाग, नई दिल्ली. ३. मि० जयदीप घोष ५/४/ए के. एल. कैदगंज नेतानगर, इलाहाबाद-२११००३। ४. मि० अमृत लाल अडवानी, श्री एस. आर. अडवानी, एल० आई० जी० मेसनेट-३ शंकर नगर, रायपुर-४९२००१.५. मि. मुकेश जैन द्वारा श्रीमती हेम बाला जैन, ५४, रसीद मार्केट, पटपड़गंज रोड, दिल्ली-११००५१ ६. मि० विक्रमजीत सिंह सोधी, पुराना बिजली घर, आउटसाइड धुरी गेट, संगरूर-१ ७. काकील अहमद पुत्र श्री खलील अहमद फ्रुटमर्चेन्ट द्वारा वहीद हसन अलियास, सालु कान्ट्ररक्टर, म० नं० २७८, इमली रोड, चुगी, मु० : कानून गोयान, रुड़की (यू. पी.) ८. मि० भागाराम, इनसाइड पापुबारी नया शहर, बीकानेर-३३४००१ ९. मि० परमिन्दर सिंह म० नं० ३३६१. सैक्टर, १५-डी, चन्दीगढ़-१६००१५. १०. मि० भीम सैन म० नं० २६५५ गली हरी शंकर, बाजार सीताराम, अन्गुरी खिड़की, दिल्ली-११०००६

परोपकारी



बात-बे-बात की





बच्चों के सूखा रोग
की प्रसिद्ध दवा
लाल तेल
लाल तेल
Govt Regd
No 3080
Ch DEVI SINGH GUPTA
Rais & Zamindar
On 26-1-1920
बच्चों के दाँत
सरलता से
निकलते हैं।
निर्माता:- लाल तेल फार्मेसी उन्नाव, यू० पी०
दिल्ली में हमारे डीलर्ज :—
कान्ती लाल आर. पारिख, चांदनी चौक, दिल्ली-६
गोपाल कैमिकल कम्पनी, तिलक बाजार, दिल्ली-६
दी रोयल कैमिकल कम्पनी, ३२२,
खारी बावली, दिल्ली-६
रत्तनलाल जगजोत सिंह, १८६७, खारी बावली दिल्ली-६

(पृष्ठ ३४ से आगे)

पानी का एक जोरदार रेला आया और समधी के पांव उखड़ गए···वह एक तिनके के समान पानी की धारा में आए और चिल्लाए—

'बचाओ···बचाओ···'

लेकिन देखते ही देखते समधी का बदन दृष्टि से ओझल हो गया···दत्त जोर से चिल्लाया—

'बचाओ···पिताजी···'

वह पानी में कूदने वाला था कि मुन्नी ने झपटकर उसका हाथ पकड़ लिया···तभी एक जोर से धमाका हुआ और पुल के जिस भाग पर वह खड़े थे वह भी चिरमिरा कर पानी में गिर गया। गाड़ियां लकड़ी के खिलौने की तरह पानी में डुबकियां खाने लगीं। कुछ भी पता न चला कि कौन किधर बह गया···डूबा या बच गया। मुन्नी और दत्त भी एक साथ ही एक-दूसरे का हाथ पकड़े पानी में गिरे थे···लेकिन पानी में गिरते-गिरते ही दोनों के हाथ छूट गए थे—और जब मुन्नी पानी के रेले पर आई···दो-चार डुबकियां खाकर उसकी नाक और पेट में पानी भर गया तो फिर उसे कुछ भी सुध-बुध न रही।

बाढ़ का जोर बढ़ता ही जा रहा था···और अब पानी तूफानी रेले के समान उस गांव हीरापुर की ओर बढ़ रहा था जहाँ मुन्नी के माता-पिता रहते थे।

मुन्नी की आंखें खुलीं तो वह बड़ी देर तक खाली-खाली नजरों से ऊपर देखती रही···धीरे-धीरे उसकी कल्पना में तूफान वाला भयानक दृश्य उभर आया और वह चीख मार कर उठके बैठ गई। उसकी सांसें तेज चलने लगी थीं और बदन थरथर कांपने लगा था···वह आँखें फाड़ कर इधर-उधर देखे जा रही थी। वह एक छोटे से सफेद कमरे में सफेद बिस्तर पर लेटी थी···कमरे की छत और छत में लगा पंखा भी सफेद रंग का था। अचानक तेजी से कमरे का दरवाजा खुला और सफेद कपड़े पहने, सिर पर सफेद रूमाल बांधे एक औरत लपक कर मुन्नी के पास आई और उसके कंधों पर थपकियां देती हुई बोली—

'लेट जाओ बेबी···लेट जाओ···घबराओ मत, तुम बिल्कुल ठीक हो।'

'नहीं, नहीं···' मुन्नी कंपकंपाकर बोली, मैं···मैं अपने घर जाऊंगी···मुझे मेरे घर पहुंचा दो।'

'हां हां, तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देंगे···अभी तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है···तुम लेट जाओ।'

'नहीं नहीं···मैं ठीक हूं, बिल्कुल ठीक हूं।'

'अच्छा, तुम लेटो तो सही बेबी···अभी तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा देंगे।' नर्स ने बड़े प्यार से मुन्नी को थपककर कहा।

नर्स के बहुत समझाने-बुझाने पर मुन्नी लेट तो गई लेकिन फिर भी वह किसी नन्हीं-मुन्नी चिड़िया की भांति कांप रही थी। नर्स उसे प्यार से सांत्वना देकर बाहर निकली ही थी कि बरामदे के पास एक कार आकर रुकी और नर्स वहीं ठिठककर रुक गई।

कार में से एक अधेड़ आयु का व्यक्ति उतरा···उसने बढ़िया सूट पहन रखा था···उसकी उंगलियों में हीरे की अगूठियां और हाथ में चांदी की मूठ की छड़ी थी···आंखों



पर ऐनक चढ़ा रखी थी। नर्स को देखकर यह व्यक्ति बरामदे में चढ़ आया। नर्स ने जल्दी से कहा—

'आइए सेठ साहब···मैं अभी आप ही को फोन करने जा रही थी।'

'क्या हुआ नर्स···? उस लड़की को होश आया?'

'जी हाँ पूरे एक हफ्ता बाद वह अभी-अभी होश में आई है।'

'अब वह कैसी है? उसे कोई खतरा तो नहीं?'

'जी नहीं···अब वह ठीक है लेकिन निरन्तर अपने घर जाने की रट लगाए जा रही है— मैंने उसे बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर लिटाया है कि···उसे उसके घर पहुंचा देंगे।'

'ओह···।' सेठ ने बहुत धीरे से कहा—।

एकाएक उसका चेहरा उतर गया था और वह पहले से अधिक उदास दिखाई देने लगे थे। नर्स ने ध्यान से उन्हें देखा और बोली—

'आप उदास क्यों हो गये सेठ साहब?'

'ई—कुछ नहीं···कुछ भी तो नहीं।' सेठ जल्दी से अपने-आपको संभालते हुए बोले, 'उसने अपने घर का कुछ अता-पता भी बताया?'

'जी नहीं···मैंने अभी पूछा नहीं···लेकिन लड़की समझदार लगती है—शायद बता सके।'

'खैर, कोई बात नहीं—मैं उससे पूछ लूंगा···मैं आप ही उसे उसके घर पहुंचा दूंगा।'

'यह काम पुलिस भी कर सकती है···सेठ साहब आप क्यों कष्ट उठाते हैं?'

नर्स···सेठ ने फीकी मुस्कराहट के साथ कहा, 'तुम तो जानती हो कि भगवान ने मेरे साथ कितना बड़ा मजाक किया है···मेरी इकलौती लाडली बेटी को जिस स्थान पर मुझसे छीना था बिल्कुल उसी स्थान से मैंने यह लड़की पाई है—मैंने सोचा था, शायद बड़ी दुर्घटना में इसकी स्मृति खो गई हो···या भगवान न करे इसके घर वाले···।' सेठ कहते-कहते रुक गए और फिर झुरझुरी लेकर बोले, 'नहीं नहीं भगवान न करे···भगवान ऐसा न करे उसका पूरा परिवार सुरक्षित हो—तो नर्स अगर मैं स्वयं इस लड़की को इसके माता-पिता तक पहुंचाऊँगा···और जब असीम प्रसन्नता से इसके माता-पिता इसे लिपटाएंगे···तो उनकी वह प्रसन्नता शायद मेरे घावों पर मरहम का काम दे—शायद भगवान इसी प्रकार मुझे कुछ शांति दें···।'

नर्स ने सहानुभूति से सेठ साहब को देखा जिनकी आंखें भीग गई थीं। फिर वह अपनी आंखें पोंछकर बोले—

'अच्छा, अच्छा···मैं उसे अभी ले जाऊंगा···मैं उसे अभी ले जाऊंगा।'

सेठ साहब आंखें साफ करके धीरे से दरवाजा खोलकर मुन्नी वाले कमरे में प्रविष्ट हुए। मुन्नी उजले सफेद बिस्तर पर लेटी घबराई हुई नजरों से दरवाजे की ओर ही देख रही थी। सेठ साहब को आते देखकर वह सहम कर उठ बैठी और उन्हें देखने लगी।

सेठ साहब उसके पास पहुंचे और स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेर कर बड़े नम्र स्वर में बोले—

'घबराओ मत बेटी···घबराओ मत···तुम्हारी तबीयत कैसी है?'

मुन्नी के चेहरे पर झलकता हुआ भय थोड़ा कम हुआ और उसने धीरे से कहा—'जी—अब ठीक है।'

'तुम अपने घर जाना चाहती हो बेटी?'